HASAD (HINDI)

ह़सद

- शिकारी ख़ुद शिकार हो गया 1
- ह़सद, ग़ैरत और रश्क में फ़र्क़ 10
- कौन किस से ह़सद करता है ? 63
- ह़ासिद के शर से बचने के मदनी फूल 91

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पेहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिए اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रेह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़्यादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (यानी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइए ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिसे तराजिम (दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइए।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)
+91 98987 32611
E-mail : hind.printing92@gmail.com

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना पुल सिरात़ पर नूर है, जो रोज़े जुमुआ़ मुझ पर अस्सी बार दुरूदे पाक पढ़े उस के अस्सी साल के गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे।

(الجامع الصغیر للسیوطی ص ۳۲۰، الحدیث ۵۱۹۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शिकारी खुद शिकार हो गया

एक शख़्स को किसी बादशाह के दरबार में खुसूसी रुतबा ह़ासिल था। वोह रोज़ाना बादशाह के रू बरू खड़े हो कर बत़ौरे नसीह़त कहा करता था : "एह़सान करने वाले के एह़सान का बदला दो, बुरे शख़्स से बुराई से पेश न आओ क्यूंकि बुरे इन्सान के लिये तो खुद उस की बुराई ही काफ़ी है।" बादशाह उस की बेहतरीन नसीह़तों की वजह से उसे बहुत मह़बूब रखता था। बादशाह की त़रफ़ से दी जाने वाली इ़ज़्ज़त व मह़ब्बत देख कर एक दरबारी को उस शख़्स से **ह़सद** हो गया। एक दिन ह़ासिद दरबारी इस शख़्स की इ़ज़्ज़त के ख़ातिमे के लिये बादशाह से झूट बोलते हुए कहने लगा : येह शख़्स आप के बारे में लोगों से कहता फिरता है कि "बादशाह के मुंह से बहुत बदबू आती है।" बादशाह ने पूछा : "तुम्हारे पास

इस का क्या सुबूत है?" उस ने अ़र्ज़ की : " कल इसे अपने क़रीब बुला कर देखिये, येह अपनी नाक पर हाथ रख लेगा।" अगले रोज़ ह़ासिद, उस मुक़र्रब शख़्स को अपने घर ले गया और उसे बहुत सारा कच्चे लहसन वाला सालन खिला दिया। येह मुक़र्रब शख़्स खाने से फ़ारिग़ हो कर ह़स्बे मा'मूल दरबार पहुंचा और बादशाह के रू बरू नसीह़त बयान की। बादशाह ने उसे अपने क़रीब बुलाया, इस ने इस ख़याल से कि मेरे मुंह की लहसन की बू बादशाह तक न पहुंचे, अपने मुंह पर हाथ रख लिया। बादशाह को इस ह़रकत के बाइ़स यक़ीन हो गया कि दूसरा दरबारी दुरुस्त कह रहा था। बादशाह ने अपने हाथ से एक "आ़मिल" (या'नी सरकारी अह्ल कार) को ख़त़ लिखा : इस ख़त़ के लाने वाले की फ़ौरन गर्दन उड़ा दो और इस की लाश में भुस भर कर हमारी त़रफ़ रवाना करो।

बादशाह की येह आ़दत थी कि जब किसी को इन्आ़म व इकराम देना मक़्सूद होता तो ख़ुद अपने हाथ से ख़त़ लिखता, इस के इ़लावा कोई भी हुक्म अपने हाथ से न लिखता था। लेकिन इस मरतबा उस ने ख़िलाफ़े मा'मूल अपने हाथ से सज़ा का हुक्म लिख दिया। जब वोह मुक़र्रब आदमी ख़त़ ले कर शाही मह़ल से बाहर निकला तो ह़ासिद ने उस से पूछा : "येह तुम्हारे हाथ में क्या है?" उस ने जवाब दिया : "बादशाह ने अपने हाथ से फ़ुला आ़मिल के लिये ख़त़ लिखा था, येह वोही है।" ह़ासिद ने ख़त़ लिखने के साबिक़ा त़रीक़े पर क़ियास करते हुए लालच में आ कर कहा : "येह

ख़त़ मुझे दे दो" मुक़र्रब ने आ'ला ज़र्फ़ी का मुज़ाहरा करते हुए ख़त़ उस के ह़वाले कर दिया। ह़ासिद फ़ौरन आ़मिल के पास पहुंचा और ख़त़ उस के हाथ में देने के बा'द इन्आ़म व इकराम त़लब किया। आ़मिल ने कहा : "इस में तो ख़त़ लाने वाले के क़त्ल करने का हुक्म दर्ज है।" अब तो ह़ासिद के अवसान ख़त़ा हो गए, बड़ी आ़जिज़ी से बोला : "यक़ीन करो कि येह ख़त़ तो किसी दूसरे शख़्स के लिये लिखा गया था, तुम बादशाह से मा'लूम करवा लो।" आ़मिल ने जवाब दिया : "बादशाह सलामत के हुक्म में किसी "अगर मगर" की गुन्जाइश नहीं होती।" येह कह कर उसे क़त्ल करवा दिया।

दूसरे दिन मुक़र्रब आदमी ह़स्बे मा'मूल दरबार पहुंचा और नसीह़त बयान की। बादशाह ने मुतअ़ज्जिब हो कर अपने ख़त़ के बारे में पूछा। उस ने कहा : "वोह तो मुझ से फ़ुलां दरबारी ने ले लिया था।" बादशाह ने कहा : "वोह तो तुम्हारे बारे में बताता था की तुम मुझे गन्दा दहन (या'नी बदबू दार मुंह वाला) कहा करते हो !" मुक़र्रब शख़्स ने अ़र्ज़ की : "मैं ने तो कभी ऐसी कोई बात नहीं की।" बादशाह ने मुंह पर हाथ रखने की वजह दरयाफ़्त की, तो इस ने अ़र्ज़ की : "उस शख़्स ने मुझे बहुत सा कच्चा लहसन खिला दिया था, मैं नहीं चाहता था कि इस की बू आप तक पहुंचे।" बादशाह सारा मुआ़मला समझ गया और उसे ताकीद की : अब तुम नसीह़त करते हुए रोज़ाना येह बात भी कहा करो : इन्सान की तबाही के लिये उस का बुरा होना ही काफ़ी है जैसा कि उस ह़ासिद का ह़ाल हुवा। (احیاء العلوم، ج۳، ص۲۳۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! देखा आप ने **ह़सद** व लालच के मज़्मूम (या'नी बुरे) जज़्बे ने दरबारी को कैसी ख़त़रनाक और शर्मनाक साज़िश करने पर तय्यार किया लेकिन "ख़ुद आप

अपने दाम में सय्याद आ गया" के मिस्दाक़ वोह अपने ही फैलाए हुए जाल में फंस कर मौत के मुंह में जा पहुंचा। नीज़ इस हिकायत से येह दर्स भी मिला कि किसी की ने'मतें या फ़ज़ीलतें देख कर दिल नहीं जलाना चाहिये और न ही उस से ने'मतों के छिन जाने की तमन्ना करनी चाहिये क्यूंकि उसे येह सब कुछ देने वाला हमारा ख़ालिक़ व मालिक عزوجل है और वोह बे नियाज़ है जिस को चाहे जितना चाहे नवाज़ दे, हम कौन होते है उस की तक़्सीम पर ए'तिराज़ या शिकवा करने वाले!

रिहाई मुझ को मिले काश ! नफ़्सो शैतां से
तेरे हबीब का देता हूं वासिता या रब

(वसाइले बख़्शिश स. 93)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बातिनी गुनाहों की तबाह कारियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! हम में से हर एक को इस दुन्या में अपने अपने हिस्से की ज़िन्दगी गुज़ार कर जहाने आख़िरत के सफ़र पर रवाना हो जाना है। इस सफ़र के दौरान हमें क़ब्रो हश्र और पुल सिरात के नाज़ुक मर्हलों से गुज़रना पड़ेगा, इस के बा'द जन्नत या दोज़ख़ ठिकाना होगा। इस दुन्या में की जाने वाली नेकियां दारे आख़िरत की आबादी जब कि गुनाह बरबादी का सबब बनते हैं। जिस तरह कुछ नेकियां ज़ाहिरी होती हैं जैसे नमाज़ और कुछ बातिनी मसलन इख़्लास, इसी तरह बा'ज़ गुनाह भी ज़ाहिरी होते हैं जैसे क़त्ल और बा'ज़ बातिनी मसलन तकब्बुर ! इस पुर फ़ितन दौर में अव्वल तो गुनाहों से बचने का ज़ेहन बहुत ही कम है और जो खुश नसीब इस्लामी भाई गुनाहों के इलाज की कोशिशें करते भी हैं तो इन की ज़ियादा तर तवज्जोह ज़ाहिरी गुनाहों से बचने पर होती है, ऐसे

में बात़िनी गुनाहों का इ़लाज नहीं हो पाता ह़ालांकि येह ज़ाहिरी गुनाहों की निस्बत ज़ियादा ख़त़रनाक होते हैं क्यूंकि एक बात़िनी गुनाह बे शुमार ज़ाहिरी गुनाहों का सबब बन सकता है मसलन क़त्ल, ज़ुल्म ग़ीबत, चुग़ली ऐ़ब दरी जैसे गुनाहों के पीछे कीने और कीने के पीछे गुस्से का हाथ होना मुमकिन है। चुनान्चे अगर बात़िनी गुनाहों का तसल्ली बख़्श इ़लाज कर लिया जाए तो बहुत से ज़ाहिरी गुनाहों से बचना اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बेह़द आसान हो जाएगा। हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی लिखते हैं : ज़ाहिरी आ'माल का बात़िनी अवसाफ़ के साथ एक ख़ास तअ़ल्लुक़ है। अगर बात़िन ख़राब हो तो ज़ाहिरी आ'माल भी ख़राब होंगे और अगर बात़िन **ह़सद**, रिया और तकब्बुर वग़ैरा ऊ़यूब से पाक हो तो ज़ाहिरी आ'माल भी दुरुस्त होते हैं। (منہاج العابدین، ص ۱۳ ملخصاً) चुनान्चे हर इस्लामी भाई पर ज़ाहिरी गुनाहों के साथ साथ बात़िनी गुनाहों के इ़लाज पर भी भरपूर तवज्जोह देना लाज़िम है ताकि हम अपने दारे आख़िरत को इन की तबाह कारियों से मह़फ़ूज़ रख सकें। बात़िनी गुनाहों में से एक गुनाह **ह़सद** भी है जिस के बारे में इ़ल्म होना फ़र्ज़ है चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह़्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शमए रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा 624 पर लिखते हैं : "मुह़र्रमाते बात़िनिय्या (या'नी बात़िनी ममनूआ़त मसलन) तकब्बुर व रिया व ऊ़जब व **ह़सद** वग़ैरहा और इन के मुआ़लजात (या'नी इ़लाज) कि इन का इ़ल्म (या'नी जानना) भी हर मुसलमान पर अहम फ़राइज़ से है।"

(फ़तावा रज़विय्या, मुख़र्रजा, जि. 23 स. 624)

इस वक़्त जो किताब आप के सामने है इस का नाम शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مدظلہ العالی ने "**ह़सद**" रखा है, हम ने इस किताब में **ह़सद** की ता'रीफ़, अक़्साम, नुक़्सानात, अस्बाब अ़लामात और इ़लाज वग़ैरा के बारे में ज़रूरी मा'लूमात, दिल चस्प पैराए में फ़राहम करने की कोशिश की है । 10 क़ुरआनी आयात, 39 अह़ादीसे मुबारका, बुज़ुर्गाने दीन के 39 फ़रामीन, 10 ह़िकायात, दो मदनी बहारें और बे शुमार मदनी फूल इस किताब की ज़ीनत हैं। आख़िर में **ह़सद** की मा'लूमात का ख़ुलासा भी दिया गया है ताकि पढ़ने वालों को याद रखने में आसानी हो। इस किताब को तरतीब देने में बुज़ुर्गाने दीन رحمہم اللہ المبین की तालीफ़ाते बा बरकात बिल ख़ुसूस इमाम ग़ज़ाली علیہ رحمۃ اللہ الوالی की तस्नीफ़ इह़याउल उ़लूम से भरपूर इस्तिफ़ादा किया गया है। बा'ज़ मक़ामात पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अह्ले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مدظلہ العالی की कुतुबो रसाइल से ज़रूरतन मवाद नक़्ल किया है जिस का ह़त्तल मक़्दूर ह़वाला भी दे दिया है।

الحمد للہ عزوجل ! येह किताब इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों दोनों के लिये यक्सा मुफ़ीद है। इसे न सिर्फ़ ख़ुद पढ़िये बल्कि दूसरों को भी इस के मुत़ालए़ की तरग़ीब दिला कर सवाबे जारिया के ह़क़ दार बनिये ।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमे "अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश" करने के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। امین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم

शो'बए इस्लाही़ कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

9, रजबुल मुरज्जब, 1433 हि. 31, मई, 2012 ई.

आपस में ह़सद न करो

मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم ने फ़रमाया : आपस में **ह़सद** न करो, आपस में बुग़्ज़ व अ़दावत न रखो, पीठ पीछे एक दूसरे की बुराई बयान न करो और ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! भाई भाई हो कर रहो।

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी बद गुमानी, **ह़सद**, बुग़्ज़ वग़ैरा वोह चीज़ें हैं जिन से मह़ब्बत टूटती है और इस्लामी भाईचारा मह़ब्बत चाहता है, लिहाज़ा येह उ़यूब छोड़ो ताकि भाई भाई बन जाओ। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 608)

तकब्बुर, रियाकारी व झूट, ग़ीबत

*से भी और **ह़सद** से बचा या इलाही*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلٰی محمَّد

ह़सद किसे कहते हैं ?

किसी की दीनी या दुन्यावी ने'मत के ज़वाल (या'नी उस से छिन जाने) की तमन्ना करना या येह ख़्वाहिश करना कि फ़ुलां शख़्स को येह येह ने'मत न मिले, इस का नाम "**ह़सद**" है। (الحدیقۃ الندیۃ، الخلق الخامس عشر، ج۱، ص۶۰۰،۶۰۱) **ह़सद** करने वाले को "ह़ासिद" और जिस से **ह़सद** किया जाए उसे "मह़सूद" कहते हैं।

ह़सद की चन्द मिसालें

۞ किसी को माली त़ौर पर ख़ुशह़ाल देख कर जलना कुढ़ना और येह तमन्ना करना कि इस के हां चोरी या डकेती हो जाए या इस की दुकान व मकान में आग लग जाए और येह कोड़ी कोड़ी का मोह़ताज हो जाए, या ۞ किसी को आ'ला दीनी या दुन्यावी मन्सब व मर्तबे पर फ़ाइज़ देख कर दिल जलाना और येह तमन्ना करना कि इस से कोई ऐसी ग़लत़ी सरज़द हो कि येह मक़ाम व मर्तबा इस से छिन जाए और येह ज़लील व रुस्वा हो जाए, या ۞ येह ख़्वाहिश रखना कि फ़ुलां हमेशा तंग दस्त ही रहे कभी ख़ुशह़ाल न हो, या ۞ फ़ुलां को कभी कोई इ़ज़्ज़त व मर्तबा न मिले वोह हमेशा ज़िल्लत की चक्की में ही पिस्ता रहे, इस मज़्मूम ख़्वाहिश का नाम **ह़सद** है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़सद को ह़सद क्यूं कहते हैं?

"**ह़सद**" का लफ़्ज़ "**ह़सदलू**" से बना है जिस का मा'ना चीचड़ी (जूं के मुशाबेह क़दरे लम्बा कीड़ा) है, जिस त़रह़ चीचड़ी इन्सान के जिस्म से लिपट कर इस का ख़ून पीती रहती है इसी त़रह़ **ह़सद** भी इन्सान के दिल से लिपट कर गोया इस का ख़ून चूसता रहता है इस लिये इसे **ह़सद** कहते हैं। (لسان العرب، باب الحاء، ج۱، ص۸۲۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़सद बात़िनी बीमारियों की मां है

गुस्से की कोख से कीना और कीने के बत़न से **ह़सद** जनम लेता है क्यूंकि जब इन्सान को किसी पर गुस्सा आता है तो वोह

ज़बान हाथ या आखों वग़ैरा से इस का इज़्हार करता है या फिर रिज़ाए इलाही के लिये इसे पी लेता है लेकिन अगर किसी रुकावट की वजह से अपना ग़ुस्सा सामने वाले पर ''उतार'' न सके बल्कि अपने दिल में बिठा ले तो वोह ग़ुस्सा अन्दर ही अन्दर कीने और **ह़सद** में तब्दील हो जाता है और **ह़सद** से बद गुमानी व शुमातत जैसी बहुत सी ज़ाहिरी व बात़िनी बीमारियां पैदा होती है, इसी लिये **ह़सद** को ''उम्मुल अमराज़ (या'नी बीमारियों की मां) कहा गया है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ासिद की मिसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली علیہ رحمۃ اللہ الوالی लिखते हैं : ह़ासिद की मिसाल उस शख़्स की सी है जो दुश्मन को मारने के लिये पथ्थर फेंके लेकिन वोह पथ्थर दुश्मन को लगने के बजाए पलट कर फेंकने वाले शख़्स की सीधी आंख पर लगे और वोह फूट जाए अब ग़ुस्सा और ज़ियादा हो, दूसरी बार और ज़ोर से पथ्थर फेंका लेकिन इस बार भी दुश्मन को न लगा बल्कि पलट कर उसी को लगा और दूसरी आंख भी फूट गई, तीसरी बार फिर फेंका इस मरतबा सर ही फट गया और दुश्मन सलामत रहा। पथ्थर फेंकने वाले के दूसरे दुश्मन उसे इस ह़ाल में देख कर इस पर हंसते हैं, ह़ासिद का भी येही ह़ाल है शैत़ान उस से इसी त़रह़ मज़ाक़ करता है। (کیمیائے سعادت، ج۲، ص۶۱۴)

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
बुरी आ़दतें भी छुड़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 79)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़सद, ग़ैरत और रश्क में फ़र्क़

हर **ह़सद** एक सा नहीं होता बल्कि इस की चार क़िस्में हैं जिन का अलग अलग शरई़ हुक्म है, लिहाज़ा जब भी दिल में किसी की ने'मत छिन जाने की ख़्वाहिश पैदा हो तो ख़ूब अच्छी त़रह़ ग़ौर कर लीजिये कि येह ख़्वाहिश **ह़सद** की कौन सी क़िस्म के तह़्त आती है। इन अक़्साम की वज़ाह़त करते हुए मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان तफ़्सीरे नई़मी जिल्द 1 सफ़ह़ा 614 पर लिखते हैं **ह़सद** के चार दर्जे हैं : ﴾पहला﴿ येह है कि ह़ासिद दूसरों की ने'मत का ज़वाल चाहे कि ख़्वाह मुझे न मिले मगर इस के पास से जाती रहे, इस क़िस्म का **ह़सद** मुसलमानों पर गुनाहे कबीरा है और काफ़िर व फ़ासिक़ के ह़क़ में जाइज़ मसलन कोई मालदार अपने माल से कुफ़्र या ज़ुल्म कर रहा है उस के माल की इस लिये बरबादी चाहना कि दुन्या कुफ़्र व ज़ुल्म से बचे, "जाइज़" है (इस को ग़ैरत भी कहते हैं)। ﴾दूसरा﴿ दरजा येह है कि ह़ासिद दूसरे की ने'मत ख़ुद लेना चाहे की फ़ुलां का बाग़ या उस की जाएदाद मेरे पास आ जाए या उस की रियासत का मैं मालिक बनूं, येह **ह़सद** भी मुसलमानों के ह़क़ में ह़राम है। ﴾तीसरा﴿ दरजा येह है कि ह़ासिद इस ने'मत के ह़ासिल करने से ख़ुद तो आ़जिज़ है इस लिये आरज़ू करता है कि दूसरों के पास भी न रहे ताकि वोह मुझ से बढ़ न जाए येह भी मन्अ़ है। ﴾चौथा﴿ दरजा येह है कि वोह तमन्ना करे कि येह ने'मत औरों के पास भी रहे मुझे भी मिल जाए या'नी औरों का ज़वाल नहीं चाहता अपनी तरक़्क़ी का ख़्वाहिश मन्द है इसे ग़िबत़ा (या'नी रश्क) या तनाफ़ुस (या'नी ललचाना) कहते हैं। (تفسیر کبیر ج۱، ص۶۴۹ تا ۶۵۱ ملخصاً)

रश्क की मुख़्तलिफ़ सूरतें

रश्क (या'नी ग़िबत़ा) कभी वाजिब होता है कभी मुस्तह़ब और कभी जाइज़ । इस सिलसिले में तफ़्सील येह है कि रश्क दीनी ने'मतों पर होगा या दुन्यवी ने'मतों पर ! फिर अगर येह दीनी ने'मत ऐसी हो जिस का ह़ासिल करना इस शख़्स पर भी वाजिब है तब तो इसे उस ने'मत पर रश्क करना वाजिब है जैसे बा जमाअ़त नमाज़ और रमज़ान के रोज़ों की पाबन्दी करना, क्यूंकि अगर येह भी इस जैसा नमाज़ी व रोज़ादार न होना चाहे तो इस का मत़लब है कि येह बे नमाज़ी व रोज़ा ख़ोर रहने पर ख़ुश है जिस से गुनाह पर राज़ी रहना लाज़िम आएगा और येह ह़राम है और अगर इस दीनी ने'मत का तअ़ल्लुक़ फ़राइज़ व वाजिबात से नहीं फ़ज़ाइल से हो तो इस सूरत में रश्क मुस्तह़ब है जैसे ज़िक्रुल्लाह करना दुरूदे पाक पढ़ना, नवाफ़िल अदा करना, राहे ख़ुदा में ख़र्च करना और सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ात में शिर्कत करना वग़ैरा, और अगर वोह ने'मत ऐसी है जिसे ह़ासिल करना जाइज़ है जैसे निकाह़ तो इस में रश्क करना जाइज़ है, फिर अगर येह रश्क दुन्यावी ने'मतों में हो जैसे ख़ूब सूरत मकानात, कपड़े, गाड़ियां और ज़ेवरात वग़ैरा तो ऐसा रश्क मुआ़फ़ है ।

(احیاء علوم الدین، کتاب ذم الغضب، ج ۳، ص ۲۳۶ ملخصا والزواجر عن اقتراف الکبائر، الباب الاول، ج ۱، ص ۱۲۵ ملخصا)

रश्क है या ह़सद ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह कैसे पता चलेगा कि हमारे दिल में किसी के लिये रश्क है या **ह़सद** ? क्यूंकि मुमकिन है जिसे हम रश्क समझें वोह **ह़सद** हो जो हमें बरबाद कर दे ! तो इस की

कसोटी (या'नी परखने का मे'यार) येह है कि अगर किसी इस्लामी भाई के पास कोई ने'मत देख कर आप के दिल में आए कि काश ऐसी ही ने'मत मुझे भी मिल जाए लेकिन येह भी इस से मह़रूम न हो तो येह रश्क है लेकिन अगर साथ ही साथ येह भी दिल में आए कि अगर मुझे न मिले तो इस के पास भी न रहे तो संभल जाइये कि येह **ह़सद** है जो ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

(احیاء العلوم، کتاب ذم الغضب، ج۳،ص۲۳۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ाबिले रश्क कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **ह़सद** नहीं है मगर दो शख़्सों पर **एक** वोह शख़्स जिसे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआन सिखाया वोह रात और दिन के अवक़ात में इस की तिलावत करता है, इस के पड़ोसी ने सुना तो कहने लगा : काश ! मुझे भी वैसा ही दिया जाता जो फ़ुलां शख़्स को दिया गया तो मैं भी उस की त़रह़ अ़मल करता। **दूसरा** वोह शख़्स कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने उसे माल दिया वोह ह़क़ में माल को ख़र्च करता है, किसी ने कहा : काश ! मुझे भी वैसा ही दिया जाता जैसा फ़ुलां शख़्स को दिया गया तो मैं भी उसी की त़रह़ अ़मल करता। (صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، ج۳،ص۴۱۰،الحدیث:۵۰۲۶)

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : (यहां) **ह़सद** से मुराद ग़िबत़ा है जिस को लोग रश्क कहते हैं, जिस

के येह मा'ना हैं कि दूसरे को जो ने'मत मिली वैसी मुझे भी मिल जाए और येह आरज़ू न हो कि इसे न मिलती या इस से जाती रहे और **ह़सद** में येह आरज़ू होती है, इस वजह से **ह़सद** मज़मूम है और गि़बत़ा मज़मूम नहीं। (मज़ीद लिखते हैं) : येही दो चीज़ें गि़बत़ा करने की हैं कि येह दोनों ख़ुदा عزوجل की बहुत बड़ी ने'मतें हैं गि़बत़ा इन पर करना चाहिये न कि दूसरी ने'मतों पर, واللہ اعلم بالصواب

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 हिस्सा :16 स. 541)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى علٰى محمّد

शाने मह़बूबी पर रश्क करेंगे

अल्लाह तआ़ला ने हमारे मदनी आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم को ऐसी शाने रिफ़अ़त अ़ता फ़रमाई है कि मैदाने मह़शर में इस की एक झलक देख कर सब रश्क करेंगे, चुनान्चे ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم ने क़ियामत के ह़ालात बयान करते हुए येह भी इरशाद फ़रमाया : मैं उस मक़ाम पर खड़ा होउंगा कि मुझ पर अगले और पिछले रश्क करेंगे।

(سنن الدارمی، کتاب الرقاق، ج ۲، ص ۴۱۹، الحدیث:۲۸۰۰)

या'नी मक़ामे मह़मूद अ़र्शे आ'ज़म के दाहिने त़रफ़, वोह ख़ास हमारा मक़ाम है जिस पर सारे अम्बिया व औलिया रश्क फ़रमाएंगे। ख़याल रहे कि दीनी अ़ज़मत पर रश्क करना अच्छी चीज़ है **ह़सद** बुरी चीज़। (مرقاۃ المفاتیح ج ۹ ص ۵۶۲ ملخصا و مراۃ المناجیح، ج ۷، ص ۳۶۱)

दिखाई जाएगी मह़शर में शाने मह़बूबी
कि आप ही की ख़ुशी आप का कहा होगा

सहाबए किराम नेकियों में रश्क किया करते थे

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं कि मुहाजिर फ़ुक़रा ने सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मालदार बड़े दर्जे और दाइमी ने'मत ले गए ! फ़रमाया : वोह कैसे ? अ़र्ज़ की : जैसे हम नमाज़ें पढ़ते हैं वोह भी पढ़ते हैं और जैसे हम रोज़े रखते हैं वोह भी रखते हैं मगर वोह ख़ैरात करते हैं हम नहीं करते, वोह ग़ुलाम आज़ाद करते हैं हम नहीं करते । नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें वोह चीज़ न सिखाऊं जिस से तुम आगे वालों को पकड़ लो और पीछे वालों से आगे बढ़ जाओ और तुम से कोई अफ़्ज़ल न हो सिवाए इस के जो तुम्हारे जैसा अ़मल करे ! अ़र्ज़ की : हां ! या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم ! फ़रमाया हर नमाज़ के बा'द 33,33 बार तस्बीह़, तक्बीर और ह़म्द करो (या'नी اَلْحَمْدُ لِلّٰہ, और سُبْحٰنَ اللّٰہ,اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहो) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ कहते हैं कि फिर मुहाजिर फ़ुक़रा हुज़ूरे अन्वर صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم की ख़िदमत में लौटे और अ़र्ज़ की : हमारे इस अ़मल को हमारे मालदार भाइयों ने सुन लिया तो उन्हों ने भी यूंही किया ! तब आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم ने फ़रमाया ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ या'नी येह **अल्लाह** عزوجل का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे । (صحیح مسلم،کتاب المساجد،باب استحباب الذکر...الخ،ص۳۰۰،الحدیث:۵۹۵)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान علیہ رحمۃ اللہ الحنان ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से कि "मालदार बड़े दर्जे और

दाइमी ने'मत ले गए !" के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी हमारे मुक़ाबिल दर्जात में बढ़ गए और जन्नत की **आ'ला ने'मतों के मुस्तह़िक़** हो गए, इस में न तो रब عزوجل की शिकायत है और न मालदारों पर **ह़सद** बल्कि उन पर रश्क है, दीनी चीज़ों में रश्क जाइज़ है या'नी दूसरों की सी ने'मत अपने लिये भी चाहना, **ह़सद** ह़राम है या'नी दूसरों की ने'मत के ज़वाल की ख़्वाहिश । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 119)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुअज़्ज़िनीन हम से बढ़ जाएंगे

नेकियों पर रश्क की एक और रिवायत मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم मुअज़्ज़िनीन (या'नी अज़ान देने वाले) हम से (सवाब में) बढ़ जाएंगे ! सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم ने फ़रमाया : जैसे वोह (अज़ान के कलिमात) कहते हैं तुम भी कह लिया करो, जब फ़ारिग़ हो जाओ तो दुआ़ करो, दिये जाओगे । (سنن ابی داؤد، کتاب الصلاۃ، باب مایقول اذا سمع المؤذن، ج۱، ص۲۲۱، الحدیث:۵۲۴)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान علیہ رحمۃ اللہ الحنان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी क़ियामत में हम उन के दर्जे तक न पहुंच सकेंगे क्यूंकि तमाम इ़बादात में हम और वोह बराबर हैं और अज़ान में वोह हम से बढ़े हुए (हैं), मा'लूम हुवा कि दीनी कामों में रश्क जाइज़ बल्कि कभी इ़बादत है । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1 स. 419)

कम सामान वाले पर रश्क

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, शहनशाहे कौनो मकान صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم ने फ़रमाया : "मेरे दोस्तों में ज़ियादा क़ाबिले रश्क मेरे नज़दीक वोह मुसलमान है जो कम सामान वाला नमाज़ के बड़े हिस्से वाला हो, अपने रब عزوجل की इबादत ख़ूब अच्छी त़रह़ करें और खुफ़्या उस की इत़ाअ़त करे और लोगों में छुपा हुवा रहे कि उस की त़रफ़ उंगलियों से इशारे न किये जाएं, उस का रिज़्क़ ब क़दरे ज़रूरत हो उस पर सब्र करें।" फिर फ़रमाया : उस की मौत जल्द आ जाए, उस पर रोने वालियां कम हों और उस की मीरास थोड़ी हो।

(سنن الترمذی، کتاب الزہد، ج ۴، ص ۱۵۵، الحدیث: ۲۳۵۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلی اللہ تعالٰی علٰی محمد

बद कार पर रश्क न करो

हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم ने फ़रमाया : لَا تَغْبِطَنَّ فَاجِرًا بِنِعْمَتِهٖ فَاِنَّكَ لَا تَدْرِیْ مَا هُوَ لَاقٍ بَعْدَ مَوْتِهٖ या'नी तुम किसी बद कार पर किसी ने'मत की वजह से रश्क न करो क्यूंकि तुम नहीं जानते कि वोह मरने के बा'द किस चीज़ से मिलेगा।

(شرح السنۃ للبغوی، کتاب الرقاق، ج ۷، ص ۳۲۲، الحدیث: ۳۳۹۸)

यहां ने'मत से मुराद दुन्यावी ने'मत है जैसे अवलाद, माले ज़ाहिरी, दुन्यावी इ़ज़्ज़त और हुकूमत वग़ैरा या'नी अगर किसी बद कार सियाह कार को येह ने'मतें मिल जाएं तो तुम इस पर रश्क न

करो येह ख़याल न करो कि अल्लाह तआ़ला उस से राज़ी व ख़ुश है। उस के लिये येह ने'मतें बा'दे मौत मुसीबत बन जाएगी जिन से इस के अ़ज़ाब में और ज़ियादती होगी लिहाज़ा येह ने'मत राह़त की शक्ल में अ़ज़ाब है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 71, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हमारा रश्क किन चीज़ों में होता है?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा बाला रिवायात व ह़िकायात से हमें येह दर्स मिला कि रश्क तक़्वा व परहे़ज़गारी पर होना चाहिये न कि मालदारी पर ! अब हमें ख़ुद पर ग़ौर करना चाहिये कि हम किन चीज़ों में रश्क करते है ? कहीं ऐसा तो नहीं कि किसी का आ़लीशान बंगला, शानदार गाड़ी, बेंक बेलेन्स, नोकर चाकर और दीगर सहुलियात व आसाइशात और तअ़य्युशात देख कर हमारे दिल में भी इन चीज़ों के ह़ुसूल की ख़्वाहिश बेदार हो जाती है ? बल्कि हम तन मन धन से इन चीज़ों के ह़ुसूल में कोशां भी हो जाते हैं ? लेकिन ज़रा सोच कर बताइये कि क्या कभी ऐसा भी हुवा कि किसी मुसलमान को नमाज़, रोज़े और दीगर फ़राइज़ व वाजिबात की पाबन्दी करते देख कर हमारे दिल में भी उस जैसा बनने की तमन्ना पैदा हुई हो ? किसी इस्लामी भाई को सुनन व मुस्तह़ब्बात मसलन तिलावते क़ुरआन, तहज्जुद, इशराक़ व चाश्त और अव्वाबीन के नवाफ़िल की पाबन्दी करता देख कर हमें इस की पैरवी करने का जज़्बा मिला हो ? किसी को दुरूदे पाक की कसरत करता देख कर हमारा भी दुरूद शरीफ़ पढ़ने को जी चाहा हो ? किसी को सदक़ा व ख़ैरात करते देख कर हमारा भी राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का ज़ेह्न बना

हो ? किसी आ़शिक़े रसूल को दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बनते देख कर हम ने भी राहे ख़ुदा में सफ़र करने की निय्यत की हो ? याद रखिये ! दुन्या का माल व अस्बाब इस लाइक़ ही नहीं कि इस पर रश्क किया जाए, क्यूंकि येह तो येही दुन्या ही में रह जाएगा, आख़िरत की आ़लीशान ने'मतें उसी को मिलेंगी जिस ने दुन्या में नेकियों का ख़ज़ाना जम्अ़ किया होगा ! इस लिये हमें चाहिये कि दुन्यावी ने'मतों पर ललचाने के बजाए इन्आ़माते आख़िरत पाने के लिये कमर बस्ता हो जाएं ।

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले
कोई नहीं भरोसा ऐ भाई ज़िन्दगी का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों से बचने और नेकियों का ख़ज़ाना इकठ्ठा करने का मदनी ज़ेह्न बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआन व सुन्नत की गैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत, आ़शिक़ाने रसूल के हमराह हर महीने तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र को आपना मा'मूल बना लीजिये और नेक बनने के नुस्ख़े या'नी मदनी इन्आ़मात का रिसाला मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कर के इन मदनी इन्आ़मात पर पाबन्दी से अ़मल के साथ साथ रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कीजिये और हर माह की दस तारीख़ से पहले पहले अपने यहां के मदनी इन्आ़मात के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवा दीजिये, आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक मदनी बहार पेश की जाती है, चुनान्चे

मैं चरस और शराब का आ़दी था

एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 25 साल) ने दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने की तफ़्सील कुछ यूं बयान की, कि मैं बे नमाज़ी था, मेरा कोई काम ढंग का न था, सारा दिन मज़ाक़ मस्ख़री करते और क़ह्क़हे मारते हुए गुज़र जाता। ग़लत़ दोस्तों की सोह़बत ने मुझे ऐसा बिगाड़ा कि मैं चरस और शराब के नशे का आ़दी हो गया। सुब्ह़ उठते ही शराब ह़ासिल करने के लिये कोशां हो जाता। मेरी बुरी आ़दतों ने मुझे कहीं का न छोड़ा, पुलीस भी मेरी तलाश में रहती। इस सूरते ह़ाल से मेरे घर वाले सख़्त परेशान थे लेकिन मुझे कब किसी की परवाह थी ! इतना ज़रूर था कि रमज़ान के महीने में बहुत सारे लोगों की त़रह़ मैं कम अज़ कम जुमुआ़ की नमाज़ तो पढ़ ही लेता था। एक दिन नमाज़े जुमुआ़ के बा'द एक इस्लामी भाई ने मुझे दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले दस दिन के ए'तिकाफ़ में बैठने की दा'वत पेश की। मेरी ख़ुश नसीबी कि मैं ने वोह दा'वत क़बूल कर ली और फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले ए'तिकाफ़ में शरीक हो गया। जब मुझे आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत मय्यसर आई और मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे बयानात सुनने का मौक़अ़ मिला तो मुझे बड़ी शिद्दत से येह एह़सास हुवा कि मैं कितना बुरा इन्सान हूं। ज़मीर की मलामत ने मुझे तौबा पर माइल किया और मैं ने दौराने ए'तिकाफ़ ही नशे व दीगर गुनाहों से तौबा कर ली, चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजाने की निय्यत कर ली और

सब्ज़ इमामे से सर सब्ज़ कर लिया। मदनी काम करते करते आज الحمد للہ عزوجل डिवीज़न मुशावरत में ह़िफ़ाज़ती उ़मूर के ख़ादिम की ज़िम्मेदारी निभाने के लिये कोशां हूं।

भाई गर चाहते हो नमाज़े पढ़ूं, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
नेकियों में तमन्ना है आगे बढ़ूं, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ासिद की क़िस्में

अगर ह़ासिद को त़ाक़त मिल जाए तो वोह मह़सूद को बरबाद कर के रख देता है और अगर इस का बस न चले तो **ह़सद** की मशक़्क़त और बीमारी की वजह से ख़ुद को बरबाद कर लेता है। बहर ह़ाल **ह़सद** में मुब्तला होने वालों की बुनियादी त़ौर पर चार क़िस्में हैं : ﴾पहला﴿ वोह शख़्स जो मह़सूद से उस ने'मत के ज़ाइल होने की तमन्ना अपने दिल में बिठा ले और अपने सीने को **ह़सद** से पाक करने के लिये कोई कोशिश न करे तो ऐसा शख़्स **ह़सद** को अपने दिल पर जमा लेने की वजह से गुनाहगार होगा, ﴾दूसरा﴿ वोह जो मह़सूद से उस ने'मत को ज़ाइल करने की कोशिश भी करे, ऐसा शख़्स ह़ासिद के साथ साथ ज़ालिम भी होगा और उसे दुगना (Double) गुनाह होगा, ﴾तीसरा﴿ वोह शख़्स जो सिर्फ़ अपनी बे बसी की वजह से मह़सूद से ज़वाले ने'मत के लिये कोई कोशिश न कर सके लेकिन अगर उस का बस चलता तो ज़रूर कोशिश करता, ऐसा शख़्स भी गुनाहगार है और ﴾चौथा﴿ वोह शख़्स जो ख़ौफ़े ख़ुदा व फ़िक्रे आख़िरत की वजह से मह़सूद के बारे में हर उस काम से बाज़ रहे जिस से शरीअ़त ने रोका है और न ही अपने **ह़सद** को ज़ाहिर

करे बल्कि ज़वाले ने'मत की तमन्ना को बुरा जानते हुए अपने दिल से **ह़सद** को ख़त्म करने के लिये कोशां रहे तो ऐसा शख़्स मा'ज़ूर है क्यूंकि वोह अपने नफ़्सानी जज़्बात को मुकम्मल त़ौर पर ख़त्म करने पर क़ुदरत नहीं रखता। (ماخوذ از فتح الباری، ج۱۱، ص۴۰۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

सब से पहले शैत़ान ने ह़सद किया था

ह़सद शैत़ानी काम है क्यूंकि सब से पहला आस्मानी गुनाह **ह़सद** ही था और येह शैत़ान ने किया था जैसा कि ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई علیہ رحمۃ اللہ القوی नक़्ल करते हैं : रब तआ़ला की पहली ना फ़रमानी जिस गुनाह के ज़रीए़ की गई वोह **ह़सद** है, इब्लीस मलऊ़न ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम علٰی نبیّنا وعلیہ الصّلوۃ والسّلام को सजदा करने के मुआ़मले में उन से **ह़सद** किया, लिहाज़ा इसी **ह़सद** ने इब्लीस को **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन की ना फ़रमानी पर उभारा। (الدرالمنثور فی التفسیر الماثور، سورۃ البقرۃ...تحت الآیۃ ۳۴، ج۱، ص۱۲۵)

शैत़ान के अन्जाम से इ़ब्रत पकड़ो

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قدس سرّہ النورانی फ़रमाते हैं कि जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने तुझ पर बरतरी दी है इस से **ह़सद** करने से परहेज़ कर वरना तुझे ह़क़ तआ़ला इस त़रह़ मस्ख़ कर देगा जिस त़रह़ उस ने इब्लीस को सूरते मल्की से सूरते शैत़ानी में मस्ख़ कर दिया जब उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम علٰی نبیّنا وعلیہ الصّلوۃ والسّلام से **ह़सद** किया और सजदे से इन्कार किया और उन पर अपनी बड़ाई ज़ाहिर की। (الطبقات الکبرٰی للشعرانی، الجزء الثانی، ص۶۷)

ह़सद शैत़ान का हथियार है

अपने रब عزوجل की ना फ़रमानी कर के शैत़ान ख़ुद तो तबाह व बरबाद हो चुका, अब वोह दूसरों की तबाही व बरबादी के दरपे है और **ह़सद** इस का एक अहम हथियार है, चुनान्चे जब ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ علی نبینا وعلیہ الصلوۃ والسلام ने अपनी क़ौम पर पानी का अ़ज़ाब आने से पहले ब हुक्मे ख़ुदावन्दी हर जिन्स का एक एक जोड़ा कश्ती में सुवार किया और ख़ुद भी सुवार हुए तो आप ने एक अजनबी बुढ़े को देख कर पूछा : तुम्हें किस ने कश्ती में सुवार किया है ? इस ने कहा : मैं इस लिये आया हूं कि लोगों के दिलों में वस्वसे डालूं ताकि उस वक़्त उन के दिल मेरे साथ और बदन आप के साथ हों । आप (علی نبینا وعلیہ الصلوۃ والسلام) ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عزوجل के दुश्मन ! सफ़ीने से उतर जा क्यूंकि तू मर्दूद है ।" तो शैत़ान ने कहा : "मैं लोगों को पांच चीज़ों से हलाकत में डालता हूं, तीन चीज़ें तो आप (علی نبینا وعلیہ الصلوۃ والسلام) को अभी बता सकता हूं मगर दो नहीं बताऊंगा ।" **अल्लाह** عزوجل ने ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ (علی نبینا وعلیہ الصلوۃ والسلام) की त़रफ़ वह्य फ़रमाई : "आप इस से कहिये कि मुझे तीन से आगाही की ज़रूरत नहीं तू मुझे सिर्फ़ वोही दो बता दे ।" शैत़ान कहने लगा : वोह दो ऐसी हैं जो मुझे कभी झूटा नहीं करती और न ही कभी ना काम लौटाती हैं और इन्हीं से मैं लोगों को तबाही के दहाने पर ला खड़ा करता हूं । इन में से एक **ह़सद** है और दूसरी ह़िर्स ! इसी **ह़सद** की वजह से तो मैं रान्दए दरगाह और मलऊ़न हुवा हूं और ह़िर्स के बाइ़स आदम (علیہ السلام) को ममनूअ़ चीज़ की ख़्वाहिश पैदा हुई और मेरा वार काम्याब हो गया । (تفسیر حقی، سورۂ ھود، تحت الآیۃ: ۴۰، ج۴، ص ۱۴۷)

नफ़्सो शैत़ान हो गए ग़ालिब

इन के चुंगल से तू छुड़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश स. 87)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़सद के नुक़्सानात

ह़सद की जो सूरतें ना जाइज़ या ममनूअ़ हैं इन का दुन्या या आख़िरत में कुछ भी फ़ाएदा नहीं बल्कि नुक़्सान ही नुक़्सान है मगर ह़ैरत है ह़ासिद की नादानी पर कि वोह फिर भी इस रोग को पालता है ! आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **ह़सद** की बुराई मोह़ताजे बयान नहीं। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 427)

एक और जगह लिखते हैं : **ह़सद** ऐसा मरज़ है जिस को लाह़िक़ हो जाए हलाक कर देता है (फ़तावा रज़विय्या जि. 19, स. 420)

बहर ह़ाल **ह़सद** करने वाले को 11 नुक़्सानात का सामना हो सकता है : (1) **अल्लाह** व रसूल की नाराज़ी (2) ईमान की दौलत छिन जाने का ख़त़रा (3) नेकियां ज़ाएअ़ हो जाना (4) मुख़्तलिफ़ गुनाहों में मुब्तला हो जाना (5) नेकियों के सवाब से मह़रूम रहना (6) दुआ़ क़बूल न होना (7) नुस्रते इलाही से मह़रूमी (8) ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना (9) सोचने समझने की सलाह़िय्यत कम हो जाना (10) ख़ुद पर ज़ुल्म करना (11) बिग़ैर ह़िसाब जहन्नम में दाख़िला।

﴾1﴿ अल्लाह व रसूल की नाराज़ी

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم को राज़ी करना दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयों और नाराज़ करना हज़ारहा बरबादियों का सबब है। ऐसे में कौन सा मुसलमान **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की नाराज़ी मोल लेने की जुरअत करेगा मगर हासिद की बे वुकूफ़ी देखिये कि वोह येह अहमक़ाना काम कर गुज़रता है और **हसद** कर के रब तआला की नाराज़ी का शिकार हो जाता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अहकाम की मुख़ालफ़त कर के गुनाहों का बोझ अपने ऊपर लादता है और उस की ने'मतों का दुश्मन क़रार पाता है, चुनान्चे रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों के भी दुश्मन होते हैं।" अर्ज़ की गई : "वोह कौन हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह जो लोगों से इस लिये **हसद** करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने फ़ज़्लो करम से उन को ने'मतें अता फ़रमाई हैं। (التفسير الكبير، البقرة، تحت الآية: ١٠٩، ج١، ص ٦٢٥ و الزواجر، ج١، ص ١١٤)

हासिद अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुक़ाबला करता है

हज़रते सय्यिदुना अबुल्लैस नस्र बिन मुहम्मद समर क़न्दी عليه رحمة الله القوى "तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन" में नक़्ल करते हैं : हासिद, अपने रब عَزَّوَجَلَّ के साथ पांच तरह से मुक़ाबला करता है : (1) हर उस ने'मत पर गुस्सा होता है जो किसी दूसरे को मिलती है (2) वोह तक़्सीमे इलाही (عَزَّوَجَلَّ) पर नाराज़ होता है या'नी अपने रब عَزَّوَجَلَّ से कहता है कि ऐसी तक़्सीम क्यूं की ? (3) वोह फ़ज़्ले इलाही (عَزَّوَجَلَّ)

पर बुख़्ल करता है (4) वोह **अल्लाह** عزوجل के दोस्त (या'नी मह़सूद) को रुस्वा करना चाहता है और चाहता है कि येह ने'मत उस से छिन जाए (5) वोह अपने दोस्त या'नी इब्लीस की मदद करता है।

(تنبیہ الغافلین، ص ۹۷)

ह़ासिद गोया अल्लाह तआ़ला पर ए'तिराज़ करता है

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली علیہ رحمۃ اللہ الوالی लिखते हैं : **ह़सद** इस लिये बहुत बड़ा गुनाह है कि **ह़सद** करने वाला गोया **अल्लाह** तआ़ला पर ए'तिराज़ कर रहा है कि फ़ुलां आदमी इस ने'मत के क़ाबिल नहीं था उस को येह ने'मत क्यूं दी है ? अब तुम ख़ुद ही समझ लो कि **अल्लाह** عزوجل पर कोई ए'तिराज़ करना कितना बड़ा गुनाह होगा। (احیاء علوم الدین، کتاب ذم الغضب والحقد والحسد، ج ۳، ص ۲۳۳)

किस के दर पर मैं जाऊंगा मौला
गर तू नाराज़ हो गया या रब (वसाइले बख़्शिश, स. 88)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ह़ासिद का मुझ से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं

अल्लाह عزوجل के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم ने ह़ासिद से अपनी बेज़ारी का इज़्हार इन अल्फ़ाज़ में फ़रमाया है : لَيْسَ مِنِّىْ ذُوْحَسَدٍ وَلَا نَمِيْمَةٍ وَلَا كَهَانَةٍ وَلَا اَنَا مِنْهُ या'नी **ह़सद** करने वाले, चुग़ली खाने वाले और काहिन का मुझ से और मेरा उन से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं।

(مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب ما جاء فی الغیبۃ والنمیمۃ، الحدیث: ۱۳۱۲۶، ج ۸، ص ۱۷۲)

न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा की क़सम

जिसे नबी ने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ ईमान की दौलत छिन जाने का ख़त़रा

ईमान एक अनमोल दौलत है और एक मुसलमान के लिये ईमान की सलामती से अहम कोई शै नहीं हो सकती लेकिन अगर वोह **ह़सद** में मुब्तला हो जाए तो ईमान को ख़त़रात लाह़िक़ हो जाते हैं, चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है तुम में पिछली उम्मतों की बीमारी **ह़सद** और बुग़्ज़ सरायत कर गई, येह मुन्ड देने वाली है, मैं नहीं कहता कि बाल मुन्डती है लेकिन येह दीन को मुन्ड देती है। (سنن الترمذی، ج۴، ص۲۲۸، الحدیث:۲۵۱۸)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : इस त़रह़ कि दीन व ईमान को जड़ से ख़त्म कर देती है कभी इन्सान बुग़्ज़ व **ह़सद** में इस्लाम ही छोड़ देता है शैत़ान भी इन्हीं दो बीमारियों का मारा हुवा है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि.6, स. 615)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़सद ईमान को बिगाड़ देता है

नबिय्ये पाक साह़िबे लौलाक़ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने

इब्रत निशान है : اَلْحَسَدُ يُفْسِدُ الْاِيْمَانَ كَمَا يُفْسِدُ الصَّبِرُ الْعَسَلَ या'नी **ह़सद** ईमान को इस त़रह़ बिगाड़ देता है, जैसे एलवा शहद को बिगाड़ देता है। (الجامع الصغیر للسیوطی ص۲۳۲،الحدیث:۳۸۱۹)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं कि **ह़सद** के ईमान में फ़साद पैदा करने का मत़लब येह है कि येह ईमान के कमाल और तमाम नेकियों को बरबाद करता है येह मुराद नहीं है कि **ह़सद** सिरे से ईमान को ले जाता और इसे फ़ना कर देता है। (مرقاۃ شرح مشکاۃ، ج۸،ص۷۷۳)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान علیہ رحمۃ اللہ الحنان फ़रमाते हैं : एलवा एक कड़वे दरख़्त का जमा हुवा रस है, सख़्त कड़वा होता है अगर शहद में मिल जाए तो तेज़ मिठास और तेज़ कड़वाहट मिल कर ऐसा बद तरीन मज़ा पैदा होता है कि इस का चखना मुश्किल हो जाता है, नीज़ येह दोनों मिल कर सख़्त नुक़्सान देह हो जाते हैं। अकेला शहद भी मुफ़ीद है और अकेला एलवा भी फ़ाइदे मन्द, मगर मिल कर कुछ मुफ़ीद नहीं बल्कि मुज़िर है जैसे शहद व घी मिला कर खाने से बर्स का मरज़ पैदा होने का अन्देशा होता है, यूं ही मछली और दूध। (मिरआतुल मनाजीह़, जि.6, स.665)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़सद और ईमान एक जगह जम्अ़ नहीं होते

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना صلی اللہ تعالیٰ علیہ و الہٖ وسلم फ़रमाते हैं : لَا يَجْتَمِعُ فِيْ جَوْفِ عَبْدٍ مُؤْمِنٍ اَلْاِيْمَانُ وَالْحَسَدُ या'नी मोमिन के दिल में ईमान और **ह़सद** जम्अ़ नहीं होते। (شعب الایمان، ج۵،ص۲۶۶،الحدیث۶۶۰۹)

ब वक़्ते नज़्अ़ सलामत रहे मेरा ईमां
मुझे नसीब हो तौबा है इल्तिजा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 94)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

यहूदी ह़सद की वजह से ईमान से मह़रूम रहे

पारह 1 सूरए बक़रह की आयत 90 में इरशाद होता है :

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ اَنْ یَّكْفُرُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْیًا اَنْ یُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۚ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍؕ وَ لِلْكٰفِرِیْنَ عَذَابٌ مُّهِیْنٌ۝۹۰

(پ۱، البقرۃ: ۹۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : किस बुरे मौलों उन्हों ने अपनी जानों को ख़रीदा कि **अल्लाह** के उतारे से मुन्किर हों इस की जलन से कि **अल्लाह** अपने फ़ज़्ल से अपने जिस बन्दे पर चाहे वह़्य उतारे, तो ग़ज़ब पर ग़ज़ब के सज़ावार हुए और काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस आयत के तह़्त लिखते हैं : या'नी आदमी को अपनी जान की ख़लासी के लिये वोही करना चाहिये जिस से रिहाई की उम्मीद हो, यहूद ने येह बुरा सौदा किया कि **अल्लाह** के नबी और उस की किताब के मुन्किर हो गए। यहूद की ख़्वाहिश थी कि ख़त्मे नबुव्वत का मन्सब बनी इस्राईल में से किसी को मिलता जब देखा कि वोह मह़रूम रहे बनी इस्माईल नवाज़े गए तो **ह़सद** (की वजह) से मुन्किर हो गए और अनवाअ़ व अक़्साम के ग़ज़ब के सज़ावार हुए। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 31)

हसद करने वाले का बुरा ख़ातिमा

हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ عليه رحمة الله الرزاق अपने एक शागिर्द की नज़्अ़ के वक़्त तशरीफ़ लाए और उस के पास बैठ कर सूरए यासीन शरीफ़ पढ़ने लगे। तो उस शागिर्द ने कहा : "सूरए यासीन पढ़ना बन्द कर दो।" फिर आप رحمة الله تعالى عليه ने उसे कलिमा शरीफ़ की तल्क़ीन फ़रमाई[1]। वोह बोला : "मैं हरगिज़ येह कलिमा नहीं पढूंगा मैं इस से बेज़ार हूं।" बस इन्हीं अल्फ़ाज़ पर उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई। हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल رحمة الله تعالى عليه को अपने शागिर्द के बुरे ख़ातिमे का सख़्त सदमा हुवा। चालीस रोज़ तक अपने घर में बैठे रोते रहे। चालीस दिन के बा'द आप رحمة الله تعالى عليه ने **ख़्वाब** में देखा कि फ़िरिश्ते उस शागिर्द को जहन्नम में घसीट रहे हैं। आप رحمة الله تعالى عليه ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : किस सबब से **अल्लाह** عزوجل ने तेरी मा'रिफ़त सल्ब फ़रमा ली ? मेरे शागिर्दों में तेरा मक़ाम तो बहुत ऊंचा था ! उस ने जवाब दिया : तीन उ़यूब के सबब से : (1) **चुग़ली** कि मैं अपने साथियों को कुछ बताता था और आप رحمة الله تعالى عليه को कुछ और (2) **हसद** कि मैं अपने साथियों से **हसद** करता था (3) शराब नोशी कि एक बीमारी से शिफ़ा पाने की ग़रज़ से त़बीब के मशवरे पर हर साल शराब का एक गिलास पीता था। (منہاج العابدین،ص ۱۵۱)

---

1. मरने वाले को येह न कहा जाए कि कलिमा पढ़ बल्कि तल्क़ीन का सहीह़ त़रीक़ा येह है कि सकरात वाले के पास बुलन्द आवाज़ से कलिमा शरीफ़ का विर्द किया जाए ताकि उसे भी याद आ जाए।

शैख़े त़रीक़त अमीरे अह्‌ले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ इस रिवायत को नक़्ल करने के बा'द अपने रिसाले "बुरे ख़ातिमे के अस्बाब" के सफ़ह़ा 8 पर लिखते हैं : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ उठिये ! और घबरा कर अपने मा'बूदे बर ह़क़ عزوجل को राज़ी करने के लिये उस की बारगाहे बेकस पनाह में झुक जाइये। आह ! चुग़ली, **ह़सद** और शराब नोशी के सबब वलिय्ये कामिल का शागिर्द कुफ़्रिय्या कलिमात बोल कर मरा। सदरुश्शरीअ़ा बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : मरते वक़्त معاذاللہ عزوجل उस की ज़बान से कलिमए कुफ़्र निकला तो कुफ़्र का हुक्म न देंगे कि मुमकिन है मौत की सख़्ती में अ़क़्ल जाती रही हो और बेहोशी में येह कलिमा निकल गया।

(बहारे शरीअ़त, जि.1, हि़स्सा. 4 स. 809 ब ह़वाला दुर्रे मुख़्तार, जि. 3 स. 96)

हमारा क्या बनेगा ?

अल्लाह عزوجل हमारे ह़ाले ज़ार पर करम फ़रमाए, नज़्अ़ के वक़्त न जाने हमारा क्या बनेगा ! आह ! हम ने बहुत गुनाह कर रखे हैं, नेकियां नाम को नहीं है, हम दुआ़ करते हैं : ऐ **अल्लाह** عزوجل नज़्अ़ के वक़्त हमारे पास शयात़ीन न आए बल्कि रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صلی اللہ تعالیٰ علیہ و الہٖ وسلم करम फ़रमाएं। (बुरे ख़ातिमे के अस्बाब, स. 29)

नज़्अ़ के वक़्त मुझे जल्वए मह़बूब दिखा
तेरा क्या जाएगा मैं शाद मरूंगा या रब

صلّوا علی الحبیب! صلی اللہ تعالیٰ علیٰ محمد

﴾3﴿ नेकियां ज़ाएअ़ हो जाना

आख़िरत की ने'मतें पाने के लिए नेकियों का ख़ज़ाना पास होना बेह़द ज़रूरी है मगर अव्वल तो शैत़ान हमें नेकियां कमाने नहीं देता और अगर हम उसे पछाड़ कर थोड़ी बहुत नेकियां जम्अ़ कर ही लें तो उस की पूरी कोशिश होती है कि किसी त़रह़ हमारी नेकियां ज़ाएअ़ हो जाएं लिहाज़ा वोह हमें ऐसे गुनाहों में मुब्तला करने की कोशिश करता है जो नेकियों को निगल जाते हैं। इन्ही गुनाहों में से एक **ह़सद** भी है, **ह़सद** की नुहूसत से नेकियों के ख़ज़ाने को गोया घुन लग जाता है और वोह ज़ाएअ़ होना शरूअ़ हो जाता है। चुनान्चे नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم ने इरशाद फ़रमाया

إِيَّاكُمْ وَالْحَسَدَ فَإِنَّ الْحَسَدَ يَأْكُلُ الْحَسَنَاتِ كَمَا تَأْكُلُ النَّارُ الْحَطَبَ

या'नी **ह़सद** से बचो वोह नेकियों को इस त़रह़ खाता है जैसे आग ख़ुश्क लकड़ी को। (سنن ابی داؤد، ج۴،ص۳۶۰،الحدیث:۴۹۰۳)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी علیہ رحمۃ اللہ الباری फ़रमाते हैं : या'नी तुम माल और दुन्यवी इ़ज़्ज़त व शोहरत में किसी से **ह़सद** करने से बचो क्यूंकि ह़ासिद **ह़सद** की वजह से ऐसे ऐसे गुनाह कर बैठता है जो उस की नेकियों को इसी त़रह़ मिटा देता है जैसे आग लकड़ी को ! मसलन ह़ासिद मह़सूद की ग़ीबत में मुब्तला हो जाता है जिस की वजह से उस की नेकियां मह़सूद के ह़वाले कर दी जाती हैं, यूं मह़सूद की ने'मतों और ह़ासिद की ह़सरतों में इज़ाफ़ा हो जाता है।

(مرقاۃ المفاتیح ج۸ص۷۷۲ ملخصاً)

तुलें मेरे आ'माल मीज़ां पर जिस दम
पड़े इक भी नेकी न कम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश स. 82)

﴾4﴿ मुख़्तलिफ़ गुनाहों में मुब्तला हो जाना

बा'ज़ बीमारियां ऐसी होती हैं जिन का इ़लाज अगर वक़्त पर न किया जाए तो वोह मज़ीद बीमारियों का सबब बनती हैं इसी त़रह़ कुछ गुनाह ऐसे होते हैं जिन में मुब्तला हो कर इन्सान गुनाहों की दल दल में फंसता ही चला जाता है। **ह़सद** भी इन्ही में से एक है। **ह़सद** की वजह से इन्सान ग़ीबत, तोह्मत, ऐ़बदरी, चुग़ली, झूट मुसलमान को तक्लीफ़ देना, क़त़ए़ रेह़्मी, जादू और शमातत (या'नी किसी की परेशानी पर ख़ुशी मह़सूस करना) जैसी मज़्मूम व बेहूदा ह़रकात में मुलव्वस हो जाता है बल्कि बा'ज़ अवक़ात तो मह़सूद को क़त्ल तक कर डालता है। आइये, देखते हैं कि ह़ासिद इन बुराइयों में क्यूं कर मुब्तला होता है।

ह़सद, ग़ीबत और तोह्मत

चूंकि ह़ासिद की दिली ख़्वाहिश होती है कि मह़सूद से उस की ने'मतें छिन जाएं या उस के मक़ामो मर्तबे में कमी वाक़ेअ़ हो जाए, या उसे फ़ुलां ने'मत मिलने ही न पाए। इस ख़्वाहिश की तक्मील के लिये वोह मह़सूद को लोगों की नज़रों से गिराने की कोशिश करता है, चुनान्चे वोह लोगों के सामने इस की झूटी सच्ची बुराइयां बयान करता है और इस पर कीचड़ उछालता है लेकिन इस कोशिश में ख़ुद इस के अपने हाथ ग़ीबत व तोह्मत और ऐ़बदरी की ग़लाज़त से गन्दे हो जाते हैं और उसे एह़सास तक नहीं होता है कि वोह ख़ुद को हलाकत के लिये पेश कर चुका है।

ग़ीबत की 20 तबाह कारियां

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 504 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "ग़ीबत की तबाह कारियां" के सफ़ह़ा 26 पर अमीरे अहले सुन्नत مدظلہ العالی लिखते हैं : क़ुरआन व ह़दीस और अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन رحمہم اللہ المبین से मुन्तख़ब कर्दा ग़ीबत की **20** तबाह कारियों पर एक सर सरी नज़र डालिये, शायद ख़ाइफ़ीन के बदन में झुर झुरी की लहर दौड़ जाए! जिगर थाम कर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : ۞ ग़ीबत ईमान को काट कर रख देती है ۞ ग़ीबत बुरे ख़ातिमे का सबब है ۞ ब कसरत ग़ीबत करने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती ۞ ग़ीबत से नमाज़ रोज़े की नूरानिय्यत चली जाती है ۞ ग़ीबत से नेकियां बरबाद होती है ۞ ग़ीबत नेकियां जला देती है ۞ ग़ीबत करने वाला तौबा कर भी ले तब भी सब से आख़िर में जन्नत में दाख़िल होगा, अल ग़रज़ ग़ीबत गुनाहे क़बीरा, क़त़ई ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ۞ ग़ीबत ज़िना से सख़्त तर है ۞ मुसलमान की ग़ीबत करने वाला सूद से भी बड़े गुनाह में गिरिफ़्तार है ۞ ग़ीबत को अगर समुन्दर में डाल दिया जाए तो सारा समुन्दर बदबूदार हो जाए ۞ ग़ीबत करने वाले को जहन्नम में मुर्दार खाना पड़ेगा ۞ ग़ीबत मुर्दा भाई का गोश्त खाने के मुतरादिफ़ है ۞ ग़ीबत करने वाला अ़ज़ाबे क़ब्र में गिरिफ़्तार होगा ۞ ग़ीबत करने वाला तांबे के नाख़ुनों से अपने चेहरे और सीने को बार बार छील रहा था ۞ ग़ीबत करने वाले को उस के पहलूओं से गोश्त काट काट कर खिलाया जा रहा था ۞ ग़ीबत करने वाला क़ियामत में कुत्ते की शक्ल में उठेगा ۞ ग़ीबत करने

वाला जहन्नम का बन्दर होगा ۞ ग़ीबत करने वाले को दोज़ख़ में ख़ुद अपना ही गोश्त खाना पड़ेगा ۞ ग़ीबत करने वाला जहन्नम के खोलते हुए पानी और आग के दरमियान मौत मांगता दौड़ रहा होगा और उस से जहन्नमी भी बेज़ार होंगे ۞ ग़ीबत करने वाला सब से पहले जहन्नम में जाएगा।

मुझे ग़ीबतों से बचा या इलाही बचूं चुग़लियों से सदा या इलाही
कभी भी लगाऊं न तोहमत किसी पर दे तौफ़ीक़े सिद्क़ो वफ़ा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़सद और चुग़ली

मह़सूद से मुतअस्सिर होने वालों को बद ज़न करना ह़ासिद की अव्वलीन कोशिश होती है, लगाई बुझाई कर के मह़सूद को बदनाम करना इस के लिये बाइ़से सुकून होता है चुनान्चे वोह मह़ब्बतों की कैंची "चुग़ली" को इस्ति'माल करता है और अपने कन्धों पर एक और गुनाह का बोझ लाद लेता है। चुग़ुल ख़ोर के इ़ब्रत नाक अन्जाम की एक लरज़ा ख़ेज़ रिवायत मुलाह़ज़ा कीजिये : चुनान्चे नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, शहनशाहे कौनो मकान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : चार त़रह़ के जहन्नमी जो कि ह़मीम और जह़ीम (या'नी खौलते पानी और आग) के दरमियान भागते फिरते वैल व सुबूर (या'नी हलाकत) मांगते होंगे। इन में से एक शख़्स वोह होगा कि जो अपना गोश्त खाता होगा। जहन्नमी कहेंगे : इस बद बख़्त को क्या हुवा, हमारी तक्लीफ़ में इज़ाफ़ा किये देता है ? कहा जाएगा : येह "बद बख़्त" लोगों का गोश्त खाता (या'नी ग़ीबत करता) और चुग़ली करता था।

(الغیبۃ والنمیمۃ لابن ابی الدنیا ص۸۹ رقم ۴۹)

सुनूं न फ़ोह़्श कलामी न ग़ीबत व चुग़ली
तेरी पसन्द की बातें फ़क़त सुना या रब

(वसाइले बख़्शिश स. 93)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़सद और झूट

अगर मह़सूद के बारे में मन्फ़ी तअस्सुर फैलाने के लिये कोई सच्ची बात न मिले तो ह़ासिद मज़्मूम मक़ासिद की तक्मील के लिये अपनी ज़बान को झूट की गन्दगी से आलूदा करने से भी दरेग़ नहीं करता यूं वोह एक और जहन्नम में ले जाने वाले काम में मुब्तला हो जाता है। फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 720 पर है : झूट और ग़ीबत मा'नवी नजासत (बात़ीनी गन्दगियां) है लिहाज़ा झूटे के मुंह से ऐसी बदबू निकलती है कि ह़िफ़ाज़त के फ़िरिश्ते उस वक़्त उस के पास से दूर हट जाते हैं जैसा कि ह़दीस में वारिद हुवा है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : إِذَا كَذَبَ الْعَبْدُ تَبَاعَدَ عَنْهُ الْمَلَكُ مِيْلًا مِنْ نَتْنِ مَا جَاءَ بِهٖ या'नी जब बन्दा झूट बोलता है, उस की बदबू से फ़िरिश्ता एक मील दूर हो जाता है।

(سنن ترمذی ج۳ ص۳۹۲ حدیث۱۹۷۹) (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि.1, स. 720)

कुत्ते की शक्ल में बदल जाएगा

मश्हूर वलिय्युल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं हमें येह बात पहुंची है कि : ग़ीबत करने

वाला जहन्नम में बन्दर की शक्ल में बदल जाएगा, झूटा दोज़ख़ में कुत्ते की शक्ल में बदल जाएगा और ह़ासिद जहन्नम में सुवर की शक्ल में बदल जाएगा। (تنبیہ المغترین،ص ۱۹٤)

मैं झूट न बोलूं कभी गाली न निकालूं

अल्लाह मरज़ से तू गुनाहों के शिफ़ा दे

(वसाइले बख़्शिश स. 103)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़सद और बद गुमानी

ह़ासिद अपनी मन्फ़ी सोच की वजह से मह़सूद के हर काम और कलाम में बुरे पहलू तलाश करता है और बद गुमानी में मुब्तला हो कर वादिये हलाकत में जा पडता है क्यूंकि इस एक गुनाह की वजह से दीगर कई गुनाह सर ज़द हो जाते हैं मसलन

(1) अगर सामने वाले पर इस का इज़्हार किया तो उस की दिल आज़ारी का क़वी अन्देशा है और बिग़ैर इजाज़ते शरई मुसलमान की दिल आज़ारी ह़राम है। हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ने फ़रमाया : जिस ने किसी मुसलमान को अज़िय्यत दी उस ने मुझे अज़िय्यत दी और जिस ने मुझे अज़िय्यत दी, पस उस ने **अल्लाह** तआ़ला को अज़िय्यत दी।

(المعجم الاوسط،ج۲،ص۳۸٦،الحدیث ۳٦۰۷)

(2) अगर उस की ग़ैर मौजूदगी में किसी दूसरे पर इज़्हार किया तो ग़ीबत हो जाएगी और मुसलमान की ग़ीबत करना ह़राम है। क़ुरआने पाक में इरशाद होता है :

وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ (پ٢٦،الحجرات:١٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और एक दूसरे की ग़ीबत न करो। क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो येह तुम्हें गवारा न होगा।*

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي (अल मुतवफ़्फ़ा 505 हि.) इरशाद फ़रमाते हैं : "मुसलमानों से बद गुमानी रखना शैतान के मक्रो फ़रेब की वजह से होता है, बेशक बा'ज़ गुमान गुनाह होते हैं और जब कोई शख़्स किसी के बारे में बद गुमानी को दिल पर जमा लेता है तो शैतान उस को उभारता है कि वोह ज़बान से इस का इज़्हार करे इस तरह वोह शख़्स ग़ीबत का मुर्तकिब हो कर हलाकत का सामान कर लेता है या फिर वोह इस के हुक़ूक़ पूरे करने में कोताही करता है या फिर उसे ह़क़ीर और खुद को उस से बेहतर समझता है और **येह तमाम चीज़ें हलाक करने वाली हैं।**" (الحديقة الندية، ج٢، ص٨)

(3) बद गुमानी के नतीजे में तजस्सुस पैदा होता है क्यूंकि दिल महज़ गुमान पर सब्र नहीं करता बल्कि तहक़ीक़ त़लब करता है जिस की वजह से इन्सान तजस्सुस में जा पड़ता है और येह भी मम्नूअ़ है। **अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَجَسَّسُوْا (پ٢٦،الحجرات:١٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐ़ब न ढूंढो।*

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْہَادِی (अल मुतवफ़्फ़ा 1367 हि.) इस आयत के तहत तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान सफ़हा 950 पर लिखते हैं : या'नी मुसलमानों की ऐब जूई न करो और इन के छुपे हाल की जुस्तजू में न रहो जिसे **अल्लाह** तआला ने अपनी सत्तारी से छुपाया।

किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और
सुनें न कान भी ऐबों का तज़किरा या रब

(वसाइले बख़्शिश स. 99)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हसद और क़त्ए रेहमी

अगर महसूद हासिद के ज़ी रेहम रिश्ते दारों में से हो तो वोह इस से ख़ैर ख़्वाही कर के सिलए रेहमी के तक़ाज़े पूरे करने के बजाए क़त्ए रेहमी की राह इख़्तियार करता है और ख़ुद को शरीअत का ना फ़रमान साबित करता है। "तबरानी" में हज़रते सय्यिदुना आ'मश رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है, हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक बार सुब्ह के वक़्त मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा थे, उन्हों ने फ़रमाया : मैं क़ातेए रेहम (या'नी रिश्ता तोड़ने वाले) को **अल्लाह** की क़सम देता हूं कि वोह यहां से उठ जाए ताकि हम **अल्लाह** तआला से मग़फ़िरत की दुआ करें क्यूंकि क़ातेए रेहम (या'नी रिश्ता तोड़ने वाले) पर आस्मान के दरवाज़े बन्द रहते हैं। (या'नी अगर वोह यहां मौजूद रहेगा तो रहमत नहीं उतरेगी और हमारी दुआ क़बूल नहीं होगी) (المعجم الکبیر ج۹ ص۱۵۸ رقم ۸۷۹۳)

रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम
करें न रुख़ मेरे पाऊं गुनाह का या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 97)

ह़सद और मुसलमानों को तक्लीफ़ देना

मह़सूद की तक्लीफ़ ह़ासिद को राह़त देती है, इस लिये ह़ासिद उसे तक्लीफ़ पहुंचाने का कोई मौक़अ़ ज़ाएअ़ नहीं करता ह़ालांकि किसी मुसलमान को तक्लीफ़ देना मुसलमान का काम नहीं बल्कि इसे तो चाहिये कि अपने इस्लामी भाई को तक्लीफ़ से बचाए। **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم का फ़रमाने हिदायत निशान है : (कामिल) मुसलमान वोह है जिस की ज़बान और हाथ से मुसलमानों को तक्लीफ़ न पहुंचे । (صحیح البخاری، ج۱،ص۱۵، الحدیث۱۰) लेकिन **ह़सद** का मारा शख़्स मह़सूद की तक्लीफ़ में ही ख़ुशी मह़सूस करता है इस लिये मौक़अ़ मिलते ही इस से बद सुलूकी भी करता है और बा'ज़ अवक़ात उस के ख़िलाफ़ साज़िशें करता है लेकिन ख़ुद पसे पर्दा रहता है ताकि मह़सूद को इस की ह़रकतों का इ़ल्म न हो सके।

मुसलमान को तक्लीफ़ देना कैसा ?

किसी मुसलमान की बिला वजहे शरई दिल आज़ारी गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। सुल्ताने दो जहान صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : مَنْ اٰذٰی مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِیْ وَمَنْ اٰذَانِیْ فَقَدْ اٰذَی اللہَ (या'नी) जिस ने (बिला वजहे शरई) किसी मुसलमान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عزوجل को ईज़ा दी। (المعجم الاوسط، ج۲،ص۳۸۶، الحدیث۳۶۰۷) **अल्लाह** व रसूल عزوجل وصلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم को ईज़ा देने वालों के बारे में **अल्लाह** عزوجل पारह 22 सूरतुल अह़ज़ाब आयत 57 में इरशाद फ़रमाता है :

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٥٧﴾

(پ۲۲، الاحزاب: ۵۷)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *बेशक जो ईज़ा देते हैं* ***अल्लाह*** *और उस के रसूल को उन पर* ***अल्लाह*** *की ला'नत है दुन्या व आख़िरत में और* ***अल्लाह*** *ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।*

हमेशा हाथ भलाई के वासिते़ उठें
बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 96)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़सद और जादू टोना

किसी शरीर और बदकार शख़्स का मख़्सूस अ़मल के ज़रीए़ आ़म आ़दत के ख़िलाफ़ कोई काम करना जादू कहलाता है। (شرح المقاصد ج۳، ص۳۳۱) मह़सूद को नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश में ह़ासिद जादू टोना जैसे क़बीह़ अफ़आ़ल भी कर गुज़रता है। जादू टोना करवाने के चक्कर में बा'ज़ मरतबा वोह ख़ुद जा'ली जादूगरों और आ़मिलों के हथ्थे चड़ जाता है और उसे लेने के देने पड़ जाते हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़सद और शमातत

मह़सूद को तक्लीफ़ में देख कर ह़ासिद ख़ुशी से फूले नहीं समाता और समझता है कि मुझे मेरी कोशिशों का फल मिल गया मगर इस नादान को येह ख़बर नहीं होती है वोह ख़ुद एक और

आफ़त में मुब्तला हो गया है, चुनान्चे "इह़याउल उ़लूम" में है : **ह़सद** की एक आफ़त येह भी है कि इस में शमातत या'नी अपने मुसलमान भाई की मुसीबत पर ख़ुशी का इज़्हार करना भी पाया जाता है। **अल्लाह** عزوجل का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنۡ تَمۡسَسۡکُمۡ حَسَنَۃٌ تَسُؤۡہُمۡ ۫ وَ اِنۡ تُصِبۡکُمۡ سَیِّئَۃٌ یَّفۡرَحُوۡا بِہَا ؕ

(پ ٤، ال عمران: ١٢٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम्हें कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरा लगे और तुम को बुराई पहुंचे तो इस पर ख़ुश हो।*

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली علیہ رحمۃ اللہ الوالی लिखते हैं : इस आयत में ख़ुशी से मुराद शमातत है और ह़सद और शमातत एक दूसरे को लाज़िम हैं। (احیاء العلوم، ج ٣، ص ٢٣٤)

कहीं तुम इस परेशानी में मुब्तला न हो जाओ

किसी का घर जलता देख कर ख़ुश नहीं होना चाहिये क्यूंकि उस के घर को जलाने वाली आग आप के घर तक भी पहुंच सकती है, चुनान्चे सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : لَا تُظْهِرِ الشَّمَاتَةَ لِاَخِيْكَ فَيَرْحَمَهُ اللّٰهُ وَيَبْتَلِيْكَ या'नी अपने भाई की परेशानी पर ख़ुशी का इज़्हार मत करो कहीं **अल्लाह** عزوجل उसे इस से नजात दे कर तुम्हें इस में मुब्तला न फ़रमा दे। (جامع الترمذی، ج ٤، ص ٢٢٧، الحدیث: ٢٥١٤)

हासिद कब खुश होता है ?

हज़रते सय्यिदुना मुआविया رضی اللہ تعالی عنہ फ़रमाते हैं : मैं हर शख़्स को राज़ी कर सकता हूं सिवाए उस शख़्स के जो मेरी किसी ने'मत से **हसद** करता है क्यूंकि वोह उसी वक़्त राज़ी होगा जब वोह ने'मत मुझ से छिन जाएगी । (الزواجر عن اقتراف الکبائر، ج۱،ص۱۱۶)

करें न तंग ख़यालाते बद कभी, कर दे
शुऊर व फ़िक्र को पाकीज़गी अ़ता या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हसद और क़त्ल

हसद का मरज़ बा'ज़ अवक़ात इतना बिगड़ जाता है कि हासिद महसूद को क़त्ल ही कर डालता है, चुनान्चे दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم का फ़रमाने आलीशान है : **हसद** से बचते रहो क्यूंकि हज़रते आदम (علیہ الصلوۃ والسلام) के दो बेटों में से एक ने दूसरे को **हसद** ही की बिना पर क़त्ल किया था, लिहाज़ा **हसद** हर ख़ता की जड़ है ।

(جامع الاحادیث للسیوطی، الحدیث:۹۳۱۴، ج۳،ص۳۹۰ ملخصا)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सब से पहला क़ातिल व मक़्तूल

रूए ज़मीन पर सब से पहला क़ातिल क़ाबील और सब से पहले मक़्तूल हज़रते सय्यिदुना हाबील رضی اللہ تعالی عنہ हैं । येह दोनों हज़रते आदम علی نبینا وعلیہ الصلوۃ والسلام के फ़रज़न्द हैं । इन का वाक़िआ येह

है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़व्वा رضی اللہ تعالٰی عنہا के हर ह़म्ल में एक लड़का और एक लड़की पैदा होते थे। और एक ह़म्ल के लड़के का दूसरे ह़म्ल की लड़की से निकाह़ किया जाता था। इस दस्तूर के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते आदम علٰی نبینا وعلیہ الصلوٰۃ والسلام ने क़ाबील का निकाह़ "लियूज़ा" से करना चाहा जो ह़ज़रते सय्यिदुना हाबील رضی اللہ تعالٰی عنہ के साथ पैदा हूई थी। मगर क़ाबील इस पर राज़ी न हुवा क्यूंकि इक्लीमा ज़ियादा ख़ूब सूरत थी इस लिये वोह उस का त़लबगार हुवा। ह़ज़रते सय्यिदुना आदम علٰی نبینا وعلیہ الصلوٰۃ والسلام ने उस को समझाया कि इक्लीमा तुम्हारे साथ पैदा हूई है इस लिये वोह तेरी बहन है उस के साथ तुम्हारा निकाह़ नहीं हो सकता मगर क़ाबील अपनी ज़िद पर अड़ा रहा। बिल आख़िर ह़ज़रते आदम علٰی نبینا وعلیہ الصلوٰۃ والسلام ने येह हुक्म दिया कि तुम दोनों अपनी अपनी कुरबानियां रब عزوجل के दरबार में पेश करो, जिस की कुरबानी मक़्बूल होगी वोही इक्लीमा का ह़क़दार होगा। उस ज़माने में कुरबानी की मक़्बूलिय्यत की येह निशानी थी कि आस्मान से एक आग उतर कर उस को खा लिया करती थी। चुनान्चे क़ाबील ने गैहूं (या'नी गन्दुम) की कुछ बालें और ह़ज़रते सय्यिदुना हाबील رضی اللہ تعالٰی عنہ ने एक बकरी कुरबानी के लिये पेश की। आस्मानी आग ने ह़ज़रते सय्यिदुना हाबील رضی اللہ تعالٰی عنہ की कुरबानी को खा लिया और क़ाबील के गैहूं को छोड़ दिया। इस बात पर क़ाबील के दिल में बुग़्ज़ व **ह़सद** पैदा हो गया और उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना हाबील رضی اللہ تعالٰی عنہ को क़त्ल की धमकी दी। ह़ज़रते सय्यिदुना हाबील رضی اللہ تعالٰی عنہ ने कहा कि कुरबानी क़बूल करना **अल्लाह** عزوجل का काम है और वोह मुत्तक़ी बन्दों ही की

क़ुरबानी क़बूल करता है, अगर तू मुत्तक़ी होता तो ज़रूर तेरी क़ुरबानी क़बूल होती । साथ ही येह भी कह दिया कि अगर तू मेरे क़त्ल के लिये हाथ बढ़ाएगा तो मैं तुझ पर अपना हाथ नहीं उठाऊंगा क्यूंकि मैं अपने रब عزوجل से डरता हूं । लेकिन क़ाबील पर इन बातों का कोई असर न हुवा और मौक़अ़ पा कर उस ने अपने भाई ह़ज़रते सय्यिदुना हाबील رضی اللہ تعالٰی عنہ को क़त्ल कर दिया । ब वक़्ते क़त्ल आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की उ़म्र बीस बरस की थी और क़त्ल का येह ह़ादिसा मक्कए मुकर्रमा में जबले सौर के पास या जबले हि़रा की घाटी में हुवा और बा'ज़ का क़ौल है कि बसरा में जिस जगह मस्जिदे आ'ज़म बनी हूई है, मंगल के दिन येह सानिह़ा हुवा । (واللہ تعالٰی اعلم) जब क़ाबील ने ह़ज़रते सय्यिदुना हाबील رضی اللہ تعالٰی عنہ को क़त्ल कर दिया तो चूंकि इस से पहले कोई आदमी मरा ही नहीं था इस लिये क़ाबील ह़ैरान था कि भाई की लाश को क्या करूं । चुनान्चे कई दिनों तक वोह लाश को अपनी पीठ पर लादे फिरा । फिर उस ने देखा कि दो कव्वे आपस में लड़े और एक ने दूसरे को मार डाला । फिर ज़िन्दा कव्वे ने अपनी चोंच और पंजों से ज़मीन कुरैद कर एक गढ़ा खोदा और उस में मरे हुए कव्वे को डाल कर मिट्टी से दबा दिया । येह मन्ज़र देख कर क़ाबील को मा'लूम हुवा कि मुर्दे की लाश को ज़मीन में दफ़्न करना चाहिये । चुनान्चे उस ने क़ब्र खोद कर उस में भाई की लाश को दफ़्न कर दिया । (مدارک التنزیل، المائدۃ، تحت الآیۃ ۳۱، ص ۲۸۲)

क़ाबील का इ़ब्रत नाक अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना हाबील رضی اللہ تعالٰی عنہ को शहीद कर के क़ाबील कैसा बरबाद हुवा इस की चन्द झलकियां मुलाह़ज़ा कीजिये : क़ाबील जो बहुत ही गोरा और ख़ूब सूरत था, भाई का ख़ून बहाते ही

उस का चेहरा बिल्कुल काला और बद सूरत हो गया। ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को ह़ज़रते सय्यिदुना हाबील رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के क़त्ल का बेह़द रन्ज व क़लक़ हुवा। यहां तक कि सो बरस तक कभी आप عَلَيْهِ السَّلَام के लबों पर मुस्कुराहट नहीं आई। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने शदीद ग़ज़ब के आ़लम में क़ाबील को फिटकार कर अपने दरबार से निकाल दिया और वोह इक़्लीमा को साथ ले कर यमन की सर ज़मीन "अ़दन" में चला गया। वहां इब्लीस उस के पास आ कर कहने लगा कि हाबील की क़ुरबानी को आग ने इस लिये खा लिया कि वोह आग की पूजा किया करता था लिहाज़ा तू भी आग कि परस्तिश किया कर। चुनान्चे क़ाबील पहला वोह शख़्स है जिस ने आग की इ़बादत की। उस की मौत का सबब येह बना कि उस के एक नाबीना बेटे ने उसे एक पथ्थर मार कर क़त्ल कर दिया और येह बद बख़्त आग की परस्तिश (या'नी इ़बादत) करते हुए कुफ़्र व शिर्क की ह़ालत में मारा गया।

(روح البیان، ج۲، ص۳۷۹)

दुन्या में होने वाले हर क़त्ल का गुनाह क़ाबील को भी मिलता है

रूए ज़मीन पर क़ियामत तक जो भी ख़ूने नाह़क़ होगा क़ाबील इस में ह़िस्से दार होगा क्यूंकि उसी ने सब से पहले क़त्ल का दस्तूर निकाला। रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, मह़बूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : कोई भी शख़्स नाह़क़ क़त्ल होता है तो इस क़त्ल का गुनाह ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के बेटे (क़ाबील) को ज़रूर मिलता है क्यूंकि उसी ने सब से पहले क़त्ल का त़रीक़ा राइज किया। (صحیح البخاری، الحدیث ۳۳۳۵، ج۲، ص۴۱۳)

उलटा लटका दिया गया

अ़ब्दुल्लाह कहते हैं हम चन्द अफ़राद समुन्दरी सफ़र पर रवाना हुए। इत्तिफ़ाक़न चन्द रोज़ तक अन्धेरा छाया रहा, जब रौशनी हुई तो एक बस्ती आ गई। मैं पीने के लिये पानी की तलाश में रवाना हुवा तो बस्ती के दरवाज़े बन्द थे, मैं ने बहुत आवाज़ें दीं, कोई जवाब न आया, इसी असना में दो शह सुवार (या'नी दो घोड़े सुवार) नुमूदार हुए, उन्हों ने कहा : ऐ अ़ब्दुल्लाह ! इस गली में दाख़िल हो जाओ तो तुम्हें पानी का एक ह़ौज़ मिलेगा उस में से पानी ले लेना और वहां के मन्ज़र को देख कर ख़ौफ़ ज़दा न होना। मैं ने उन से उन बन्द दरवाज़ों के बारे में दरयाफ़्त किया जिन में हवाएं चल रही थीं, उन्हों ने बताया : "येह वोह घर हैं जिन में मुर्दों की रूहें रहती हैं।" फिर मैं ह़ौज़ पर पहुंचा तो मैं ने देखा कि एक शख़्स पानी पर उलटा लटका हुवा है वोह अपने हाथ से पानी लेना चाहता है लेकिन नाकाम हो जाता है, मुझे देख कर पुकार ने लगा : अ़ब्दुल्लाह ! मुझे पानी पिलाओ। मैं ने बरतन ले कर डबोया ताकि उसे पानी पिला सकूं लेकिन किसी ने मेरा हाथ पकड़ लिया, मैं ने उस लटके हुए आदमी से कहा : ऐ बन्दए ख़ुदा ! तूने देख लिया कि मैं ने अपनी त़रफ़ से कोशिश की, कि तुझे पानी पिलाऊं लेकिन मेरा हाथ पकड़ा गया, तू मुझे अपना वाक़िआ़ बता। उस ने कहा : मैं ह़ज़रते आदम (علی نبینا وعلیہ الصلوۃ والسلام) का लड़का (क़ाबील) हूं, जिस ने दुन्या में सब से पहला क़त्ल किया।

(کتاب من عاش بعد الموت مع موسوعۃ لابن ابی الدنیا ج ۶ ص ۲۹۶، رقم ۴۸)

صلوا علی الحبیب! صلی اللہ تعالی علی محمد

﴾5﴿ नेकियों के सवाब से मह़रूम रहना

मुसलमान की ख़ैर ख़्वाही करना, उसे सलाम व मुसाफ़ह़ा करना, उस के सामने आ़जिज़ी का बाज़ू बिछाना, उस के दिल में खु़शी दाख़िल करना, उस के बारे में हुस्ने ज़न रखना, वोह बीमार हो जाए तो इ़यादत करना, किसी रन्ज में मुब्तला हो तो उस की ता'ज़िय्यत करना, ह़स्बे ज़रूरत उस के लिये जाइज़ सिफ़ारिश करना, येह सब सवाब के काम हैं मगर ह़ासिद कब अपने मह़सूद का भला चाहेगा ! लिहाज़ा वोह येह काम नहीं करता और नेकियों से मह़रूम रहता है ।

अ़मल का हो जज़्बा अ़ता या इलाही
गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 84)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾6﴿ दुआ़ क़बूल न होना

उ़मूमन हम हर नेक सूरत व नेक सीरत को दुआ़ के लिये कहते हैं ताकि किसी त़रह़ हमारी मुरादें बर आएं मगर ह़ासिद पर ऐसी बद बख़्ती आती है कि उस की दुआ़एं भी क़बूल नहीं होतीं चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबूल्लैस समर क़न्दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : तीन आदमियों की दुआ़ क़बूल नहीं होती ﴾1﴿ जो माले ह़राम खाता हो ﴾2﴿ जो ब कसरत ग़ीबत करता हो ﴾3﴿ जो कि मुसलमानों से **ह़सद** रखता हो । (تنبیہ الغافلین ص۹۵)

दिल का उजड़ा चमन हो फिर आबाद
कोई ऐसी हवा चला या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 89)

﴾7﴿ नुसरते इलाही से मह़रूमी

लोग मुसीबत व आज़माइश में मददे ख़ुदा वन्दी के त़लबगार होते हैं लेकिन ह़ासिद इस से मह़रूम रहता है, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने इरशाद फ़रमाया : कीना परवर कामिल दीनदार नहीं होता, लोगों को ऐ़ब लगाने वाला ख़ालिस इ़बादत गुज़ार नहीं हो सकता, चुग़ुल ख़ोर को अम्न नसीब नहीं होता और ह़ासिद की मदद नहीं की जाती। (منہاج العابدین،ص۷۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾8﴿ ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना

इ़ज़्ज़त पाने और ज़िल्लत व रुस्वाई से बचने के लिये लोग क्या कुछ नहीं करते मगर ह़ासिद अपने हाथों से अपनी ज़िल्लत व रुस्वाई का सामान ख़रीदता है। इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي नक़्ल करते हैं : "ह़ासिद शख़्स मजलिस में ज़िल्लत और मज़म्मत पाता है, मलाइका से ला'नत और बुग़्ज़ पाता है मख़्लूक़ से ग़म और परेशानियां उठाता है, नज़्अ़ के वक़्त सख़्ती और मुसीबत से दो चार होता है और क़ियामत के दिन ह़श्र के मैदान में भी रुस्वाई, तौहीन और मुसीबत पाएगा।" (احیاء العلوم،ج۳،ص۲۳۳)

तूने दुन्या में भी ऐ़बों को छुपाया या ख़ुदा
ह़श्र में भी लाज रख लेना कि तू सत्तार है

(वसाइले बख़्शिश, स.130)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जलने वालों का मुंह काला

अयाज़ सुल्त़ान मह़मूद ग़ज़नवी का एक अदना ग़ुलाम था फिर तरक़्क़ी करते करते उस का मह़बूब तरीन वज़ीर बन गया। अयाज़ की काम्याबियां ह़ासिद दरबारियों को एक आंख न भाती थीं वोह मौक़अ़ की ताक में रहते थे कि किसी त़रह़ अयाज़ को मह़मूद की नज़रों से गिरा दें। आख़िरे कार उन्हें एक मौक़अ़ मिल ही गया। हुवा यूं कि अयाज़ का मा'मूल था कि रोज़ाना मख़्सूस वक़्त में एक कमरे में चला जाता और कुछ देर गुज़ार कर वापस आ जाता। दरबारियों ने मह़मूद के कान भरना शुरूअ़ किये कि ज़रूर अयाज़ ने शाही ख़ज़ाने में ख़ुर्द बुर्द कर के माल जम्अ़ कर रखा हैं जिसे देखने के लिये कमरए ख़ास में जाता है, वोह इस कमरे को ताला लगा कर रखता है और किसी और को अन्दर दाख़िल होने की इजाज़त नहीं देता। मह़मूद को अगर्चे अयाज़ पर मुकम्मल ए'तिमाद था मगर दरबारियों को मुत़मइन करने के लिये एक वज़ीर को कहा कि उस कमरे का ताला तोड़ डालो, वहां जो कुछ मिले वोह तुम्हारा है। वज़ीर और दीगर दरबारी ख़ुशी ख़ुशी अयाज़ के कमरे में जा घुसे। मगर येह क्या ! वहां एक पुराने बोसीदा लिबास और चप्पलों के सिवा कुछ था ही नहीं ! दरबारियों की आंखें फटी की फटी रह गईं। मह़मूद ने अयाज़ से इन कपड़ों और चप्पलों के बारे में दरयाफ़्त किया तो उस ने बताया कि येह मेरी ग़ुलामी के दौर की यादगार हैं जिन्हें देख कर मैं अपनी अवक़ात याद रखता हूं और ख़ुद को मौजूदा उ़रूज पर तकब्बुर में मुब्तला नहीं होने देता। येह सुन कर मह़मूद अपने वफ़ादार वज़ीर अयाज़ से और ज़ियादा मुतअस्सिर नज़र आने लगा और ह़ासिदीन का मुंह काला हुवा।

(مثنوی مولانا روم (فارسی مع ترجمہ)، دفتر پنجم، ص ۱۹۰، ملخصا)

गधे की सूरत में उठाएंगे

सुल्त़ानुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अजमेरी عليه رحمة الله القوى ने फ़रमाया कि एक आदमी था वोह जब कभी बुज़ुर्गाने दीन رحمهم الله المبين को देखता उन से मुंह फेर लेता और **ह़सद** के मारे उन को देखना पसन्द न करता। जब वोह मर गया और उस को लोगों ने क़ब्र में उतारा और उस का मुंह क़िब्ला रुख़ किया तो फ़ौरन ही उस का मुंह फिर कर दूसरी त़रफ़ हो गया और बारहा ऐसा ही हुवा। लोग बड़े ही ह़ैरान हुए। अचानक ग़ैब से आवाज़ आई : ऐ लोगो ! क्यूं तक्लीफ़ उठाते हो, इस को यूं ही रहने दो, क्यूंकि येह दुन्या में मेरे प्यारों से मुंह फेर लिया करता था और जो शख़्स मेरे प्यारों से मुंह फेरे उस से मेरी रह़मत मुंह फेर लेती है और ऐसा शख़्स रांदए दरगाह हो जाता है और कल क़ियामत के दिन ऐसे को गधे की सूरत में उठाएंगे।

الْعِيَاذُ بِاللہ تعالٰی

(دلیل العارفین، ص ۲۵ و آبِ کوثر، ص ۲۵۲)

मुझे औलिया की मह़ब्बत अ़त़ा कर
तू दिवाना कर ग़ौस का या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

《9》 सोचने समझने की सलाह़िय्यत कम हो जाना

ग़ौर व तफ़क्कुर इन्सान की तरक़्क़ी में अहम किरदार अदा करता है मगर ह़ासिद की अ़क़्ल पर **ह़सद** के पर्दे पड़ जाते हैं, हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद

बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عليه رحمة الله الوالى फ़रमाते हैं : "**ह़सद** के बाइस, ह़ासिद का दिल अन्धा हो जाता है, यहां तक कि **अल्लाह** (عزوجل)के अह़कामात को समझने की सलाह़िय्यत ख़त्म हो जाती है ।" (منهاج العابدين ص ٧۵) ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عليه رحمة الله القوى फ़रमाया करते थे لَاتَكُنْ حَاسِداً تَكُنْ سَرِيْعَ الْفَهْمِ ह़ासिद न बन, तुझे सोचने समझने की तेज़ी नसीब होगी । (درة الناصحين ص ٧١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

«10» ख़ुद पर ज़ुल्म करना

दूसरों पर ज़ुल्म करने वाला ख़ुद को तक्लीफ़ नहीं पहुंचने देता लेकिन ह़ासिद वोह नादान है जो ख़ुद अपने आप पर ज़ुल्म करता है, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सम्माक عليه رحمة الله الرزاق इरशाद फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ासिद के इलावा किसी ज़ालिम को मज़लूम के साथ ज़ियादा मुशाबहत रखने वाला न देखा, हर वक़्त अफ़सूर्दा त़बीअ़त, परेशान ख़याल और ग़म में मुब्तला रहता है । (درة الناصحين ص ٧١) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عليه رحمة الله الوالى लिखते हैं : اَلْحَسَدُ اَحَرُّ مِنَ النَّارِ या'नी **ह़सद** आग से ज़ियादा गर्म है । (مكاشفة القلوب ص ٢٦٠)

ह़सद से बढ़ कर नुक़्सान देह शै कोई नहीं

ह़ज़रते फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी عليه رحمة الله القوى फ़रमाते हैं : **ह़सद** से बढ़ कर बद तरीन और नुक़्सान देह कोई शै नहीं, क्यूंकि **ह़सद** का असर दुश्मन से पहले ख़ुद ह़ासिद को पांच चीज़ों में मुब्तला कर देता है : (1) कभी ख़त्म न होने वाला ग़म । (2) बे अज्र

मुसीबत। (3) ना क़ाबिले ता'रीफ़ और लाइक़े मज़म्मत ह़ालत। (4) **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी। (5) तौफ़ीक़े इलाही के दरवाज़े उस पर बन्द हो जाना। (تنبیہ الغافلین ،ص۹۴)

हूं ब ज़ाहिर बड़ा नेक सूरत कर भी दे मुझ को अब नेक सीरत
ज़ाहिर अच्छा है बात़िन बुरा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स.132)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

﴾11﴿ बिग़ैर ह़िसाब जहन्नम में दाख़िला

ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले मुसलमान जन्नत में बे ह़िसाब दाख़िले की रो रो कर दुआ़ करते हैं मगर ह़ासिद की बद नसीबी देखिये कि इस को ह़िसाब लिये बिग़ैर ही जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा, चुनान्चे नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम علیہ افضل الصلوۃ والتسلیم का फ़रमाने अ़ज़ीम है, छे अफ़राद ऐसे हैं जो बरोज़े क़ियामत बिग़ैर ह़िसाब के जहन्नम में डाल दिये जाएंगे। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم वोह कौन लोग हैं? फ़रमाया : (1) ह़ाकिम अपने ज़ुल्म के बाइ़स (2) अह्ले अ़रब तअ़स्सुब (या'नी क़ौम परस्ती के ज़ुल्म पर अपनी क़ौम की मदद करते रहने) के सबब (3) गाऊं का सरदार तकब्बुर की बदौलत (4) ताजिर ख़ियानत करने की वजह से (5) देहाती अपनी जहालत के सबब (6) और ज़ी इ़ल्म अपने **ह़सद** के बाइ़स। (کنز العمال، ج۱۶،ص۳۷،حدیث:۴۴۰۲۳/۴۴۰۳۴ملتقطا)

गुनाहगार हूं मैं लाइक़े जहन्नम हूं
करम से बख़्श दे मुझ को न दे सज़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स.93)

ह़सद के मज़ीद नुक़्सानात

मज़्कूरा बाला नुक़्सानात के साथ साथ ह़ासिद दुन्यावी ए'तिबार से भी ख़सारे में रहता है क्यूंकि ۞ इस के तअ़ल्लुक़ात किसी के साथ भी ख़ुशगवार नहीं रहते क्यूंकि वोह अपनी मन्फ़ी सोच की वजह से हर एक से **ह़सद** व बद गुमानी में मुब्तला होने लगता है ۞ ह़ासिद ज़ेह्नी इन्तिशार का शिकार हो जाता है जिस की वजह से वोह मुख़्तलिफ़ जिस्मानी बीमारियों मसलन हाई ब्लड प्रेशर और दिल के मरज़ में भी मुब्तला हो सकता है ۞ दूसरों की तनज़्ज़ुली की कोशिश में वोह अपनी तरक़्क़ी से मह़रूम रहता है ۞ लोगों को ज़लील करने की कोशिश में रहता है जवाबन उसे भी एह़तिराम नहीं मिलता ۞ लोग उस से नफ़रत करने लगते हैं और उसे अपनी ख़ुशियों में शरीक नहीं करते क्यूंकि न वोह ख़ुद ख़ुश रहता है न किसी को ख़ुश देख सकता है ۞ दूसरों के दुख में ख़ुश रहने वाले को कभी सच्ची ख़ुशी नसीब नहीं होती ۞ ह़ासिद के **ह़सद** के नतीजे में बा'ज़ अवक़ात हंसते बसते घर नाचाकियों का शिकार हो जाते हैं ۞ चूंकि फ़र्द से मुआ़शरा बनता है इस लिये ह़ासिद का बिगाड़ मुआ़शरती ज़िन्दगी को बिगाड़ देता है और जिस अ़लाक़े या मुल्क के लोग एक दूसरे से **ह़सद** करने लगें तो ज़ाती नुक़्सानात के साथ साथ मुआ़शरती तरक़्क़ी का पहिय्या भी रुक जाता है क्यूंकि एक दूसरे की टांगें खींचने का अ़मल ता'मीरी सलाह़िय्यतों को तख़रीबी मक़ासिद में इस्ति'माल होने पर मजबूर कर देता है۞ **ह़सद** का नासूर अगर किसी इदारे या तह़रीक के अफ़राद के दिलों में जड़ पकड़ जाए तो वोह इदारा या तह़रीक पै दर पै नुक़्सानात का शिकार होने लगती है।

ह़सद क्यूं होता है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इतने सारे दुन्यवी व उख़्रवी नुक़्सानात का सबब बनने वाला मरज़े **ह़सद** यूं ही बैठे बिठाए पैदा नहीं हो जाता बल्कि उस के बहुत सारे अस्बाब होते हैं मसलन बा'ज़ अवक़ात ह़ासिद की मह़सूद से कोई दुश्मनी होती है जिस की वजह से वोह नहीं चाहता कि उस के दुश्मन (या'नी मह़सूद) को कोई ने'मत मिले, या ह़ासिद मह़सूद पर अपनी बरतरी क़ाइम रखना चाहता है ताकि वोह फ़ख़्र व तकब्बुर से अपने नफ़्स को लज़्ज़त दे सके इस लिये वोह येह बरदाश्त नहीं कर सकता कि मह़सूद को कोई ऐसी ने'मत ह़ासिल हो जिस की वजह से वोह इस का हम पल्ला हो जाए, या ह़ासिद मह़सूद पर बड़ाई ह़ासिल करने का तमन्नाई होता है लेकिन मह़सूद के पास मौजूद ने'मतें इस में रुकावट होती हैं इस लिये वोह मह़सूद से ने'मत छिन जाने कि ख़्वाहिश करता है ताकि वोह इस ने'मत को ह़ासिल कर के इसे नीचा दिखा सके और अपनी ख़ुद पसन्दी को तस्कीन दे सके। यूं सात चीजें **ह़सद** की बुन्याद बन सकती हैं : (1) बुग़्ज़ व अ़दावत (2) ख़ुद साख़्ता इ़ज़्ज़त (3) तकब्बुर (4) एह़सासे कम्तरी (5) मन पसन्द मक़ासिद के फ़ौत होने का ख़ौफ़ (6) हुब्बे जाह (7) क़ल्बी ख़बासत। (احیاء علوم الدین، ج ۳، ص ۲۳۷تا۲۳۹ ملخصاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पहला सबब — बुग़्ज़ व अ़दावत

येह **ह़सद** का सख़्त तरीन सबब है क्यूंकि जब एक शख़्स को दूसरे से कोई तक्लीफ़ या रन्ज व ग़म पहुंचता है तो उसे तक्लीफ़ देने वाले पर गुस्सा आता है फिर अगर वोह सामने वाले पर अपना गुस्सा न "उतार" सके तो उस के दिल में बुग़्ज़ व अ़दावत और

कीना जड़ पकड़ लेता है जो इलाज न करने की सूरत में वक़्त के साथ साथ तन आवर दरख़्त की शक्ल इख़्तियार कर लेता है। फिर उस शख़्स की ह़ालत ऐसी हो जाती है कि वोह अपने दुश्मन की ग़मी पर ख़ुशी और ख़ुशी पर ग़मी मह़सूस करता है और उसे कोई ने'मत मिलते हुए नहीं देख सकता। इस लिये कभी वोह चाहता है कि मेरे दुश्मन से येह ने'मत ज़ाइल हो जाए चाहे मुझे ह़ासिल हो या न हो और कभी येह तमन्ना होती है कि येह इस से छिन कर मुझे मिल जाए। यूं वोह ख़ुद को बुग़्ज़ व कीने के साथ साथ **ह़सद** जैसे हलाकत ख़ैज़ बात़िनी मरज़ में भी मुब्तला कर लेता है। उस की बक़िय्या ज़िन्दगी अपने मुख़ालिफ़ से ने'मत के इज़ाले की तमन्नाओं, इस की तबाही व बरबादी की साज़िशों, ऐ़ब जोइयों, पर्दा दरियों और इसी क़िस्म के दूसरे गुनाहों भरे कामों में गुज़र जाती है। इस त़रह़ की मिसालें मौजूदा मुआ़शरे में ब कसरत देखी जा सकती है मसलन अगर किसी को अपने रिश्तेदार से बुग़्ज़ व अ़दावत हो जाए तो वोह क़राबत दारी को पसे पुश्त डाल कर कुछ इस त़रह़ की ह़ासिदाना तमन्नाएं करने लगता है कि काश ! किसी त़रह़ उस का कारोबार, ज़मीनें और फ़स्लें तबाह व बरबाद हो जाएं, या उस की नोकरी ख़त्म हो जाए, या उन के हंसते बस्ते घर में नाचाकियां शुरूअ़ हो जाएं, या इस का ऐसा एक्सीडेन्ट हो कि इस के हाथ पाउं टूट जाएं और येह उ़म्र भर के लिये मा'ज़ूर हो जाए, या उस के घर में ऐसा डाका पड़े कि घर में फूटी कोड़ी भी बाक़ी न रहे और येह लोगों से भीक मांगता फिरे और इस की अवलाद दर दर की ठोकरें खाने पर मजबूर हो जाए, वग़ैरा वग़ैरा। अगर इस की येह तमन्नाएं किसी ह़द तक पूरी हो जाती हैं तो वोह अपने दिल में शैत़ानी सुकून मह़सूस करता है लेकिन अगर उस की

येह मज़मूम ख़्वाहिशात अज़ ख़ुद पूरी न हो तो अकसर ऐसा होता है कि ह़ासिद इन तमन्नाओं को ह़क़ीक़त का रूप देने के लिये भयानक तरीन काविशें करने लगता है, वोह इस त़रह़ कि अपने मुख़ालिफ़ के घर में डाका डलवा देता है या उस की ज़मीनों पर खड़ी तय्यार फ़स्लों में आग लगवा देता है या उस के बच्चे को क़त्ल करवा देता है या ना जाइज़ मुक़द्दमात दर्ज करवा कर उन्हें कोर्ट कचह्री के चक्कर में फंसा देता है फिर जब उस के मुख़ालिफ़ को मौक़अ़ मिलता है तो वोह भी इस क़िस्म की शैत़ानी ह़रकतें करता है फिर येह दुश्मनी नस्ल दर नस्ल चलती है, मार कटाई होती है, लाशें गिरती हैं और ऐसे ऐसे घिनावने काम किये जाते हैं कि शैत़ान भी शर्मा जाए।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

यहूदियों के मुसलमानों से ह़सद की वजह

जब मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वते इस्लाम पर लब्बैक कहते हुए लोगों की एक बहुत बड़ी ता'दाद दामने इस्लाम में आ गई तो यहूदी इसी दुश्मनी वाली इ़ल्लत के बाइ़स मुसलमानों से **ह़सद** की ला'नत में गिरफ़्तार हुए जैसा कि पारह 1 सूरए बक़रह आयत 109 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۖۚ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बहुत किताबियों ने चाहा काश तुम्हें ईमान के बा'द कुफ़्र की त़रफ़ फेर दें अपने दिलों की जलन से, बा'द इस के कि ह़क़ उन पर ख़ूब ज़ाहिर हो चुका है।*

इस आयते पाक के तह़्त "तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عليه رحمة الله الهادى लिखते हैं : इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत जानने के बा'द यहूद का मुसलमानों के कुफ़्र व इरतिदाद की तमन्ना करना और येह चाहना कि वोह ईमान से मह़रूम हो जाएं, **ह़सद** के त़ौर पर था । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स.37)

यहूदियों के ह़सद की मज़ीद वुजूहात

रसूले अकरम صلى الله تعالى عليه و اله وسلم की बारगाह में यहूद का तज़्किरा हुवा तो आप صلى الله تعالى عليه و اله وسلم ने फ़रमाया बेशक वोह लोग किसी चीज़ में हम से **ह़सद** नहीं करते जितना जुमुआ़ पर हम से **ह़सद** करते हैं जिस की त़रफ़ **अल्लाह** عزوجل ने हमारी रहनुमाई फ़रमाई और उन्हों ने इसे खो दिया और क़िब्ले पर **ह़सद** करते हैं जिस की त़रफ़ रब तआ़ला ने हमें हिदायत फ़रमाई और उन्हों ने इसे खो दिया और इमाम के पीछे हमारे "आमीन" कहने पर हम से **ह़सद** करते हैं। (الترغيب والترهيب، ج١،ص١٩٤،الحديث:٣) एक और मक़ाम पर आप صلى الله تعالى عليه و اله وسلم ने फ़रमाया : यहूद अपने दीन से उकता गए और वोह ह़ासिद क़ौम हैं और वोह मुसलमानों से तीन चीज़ों पर ज़ियादा **ह़सद** करते हैं, सलाम का जवाब देने, सफ़ों के खड़ा होने और फ़र्ज़ नमाज़ में इमाम के पीछे आमीन कहने पर। (الترغيب والترهيب، ج١،ص١٩٤،الحديث:٣)

आमीन कहने वाले के गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صلى الله تعالى عليه و اله وسلم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : इमाम जब "وَلَا الضَّآلِّيْنَ" कहे तो तुम लोग आमीन कहो जिस की आमीन फ़िरिश्तों की आमीन के मुवाफ़िक़ होती है, उस के पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं। (بخاری،ج١،ص٢٧٥،الحديث٧٨٠)

सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى लिखते हैं : आमीन आहिस्ता कही जाए कि अगर ज़ोर से कहना होता तो इमाम के आमीन कहने का पता और मौक़अ़ बताने की क्या ह़ाजत होती कि वोह "وَلَا الضَّآلِّيْنَ" कहे, तो आमीन कहो। (बहारे शरीअ़त, जि.1,हिस्सा : 3 , स. 502)

यहूदी मुआ़लिज का इमाम माज़री के साथ ह़सद

आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 243 पर लिखते हैं : "इमाम माज़री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अ़लील (या'नी बीमार) हुए (तो) एक यहूदी मुआ़लिज (या'नी त़बीब, आप का इ़लाज कर रहा) था, अच्छे हो जाते फिर मरज़ औ़द करता (या'नी दोबारा हो जाता), कई बार यूं ही हुवा, आख़िर उसे तन्हाई में बुला कर दरयाफ़्त फ़रमाया, उस ने कहा : अगर आप सच पूछते हैं तो हमारे नज़दीक इस से ज़ियादा कोई कारे सवाब नहीं कि आप जैसे इमाम को मुसलमानों के हाथ से खो दूं। इमाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उसे दफ़्अ़ (या'नी दूर) फ़रमाया, मौला तआ़ला ने शिफ़ा बख़्शी, फिर इमाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तिब की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई और इस में तसानीफ़ कीं और त़लबा को ह़ाज़िक़ अत़िब्बा (या'नी माहिर त़बीब) कर दिया और मुसलमानों को मुमानअ़त फ़रमा दी कि क़ाफ़िर त़बीब से कभी इ़लाज न कराएं।[1] "

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 21 स. 243)

1 : कुफ़्फ़ार से इ़लाज करवाने के बारे में मज़ीद तफ़्सीलात फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 238 ता 243 पर मुलाह़ज़ा कीजिये।

मुनाफ़िक़ीन भी मुसलमानों से ह़सद करते थे

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने ज़बान से इस्लाम का इक़रार और दिल से इन्कार करने वाले मुनाफ़िक़ीन निफ़ाक़ जैसी ईमान लेवा बीमारी के साथ साथ मुसलमानों से **ह़सद** में भी मुब्तला थे। इन के **ह़सद** का तज़्किरा पारह 4 सूरए आले इमरान की आयत 119 ता 120 में इन अल्फ़ाज़ में किया गया है :

وَ اِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَیْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَیْظِ ؕ قُلْ مُوْتُوْا بِغَیْظِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۱۹﴾ اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۫ وَ اِنْ تُصِبْكُمْ سَیِّئَةٌ یَّفْرَحُوْا بِهَا ؕ

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अकेले हों तो तुम पर उंगलियां चबाएं ग़ुस्से से तुम फ़रमा दो कि मर जाओ अपनी घुटन में **अल्लाह** ख़ूब जानता है दिलों की बात। तुम्हें कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरा लगे और तुम को बुराई पहुंचे तो इस पर ख़ुश हों।*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दूसरा सबब — ख़ुद साख़्ता इ़ज़्ज़त के जाते रहने का ख़ौफ़

इस का मत़लब येह है कि ह़ासिद दूसरों को अपने से बुलन्द मक़ामो मर्तबे पर देख कर दिल में बोझ मह़सूस करता है। जब इस के हम पल्ला आदमी को हुकूमत या माल व दौलत या इ़ल्म या माल या कोई ओ़हदा वग़ैरा मिलता है तो इसे डर होता है कि अब दूसरा शख़्स इस से आगे बढ़ जाएगा, लोग उस की ता'रीफ़ें करेंगे और मह़फ़िल में उसे नुमायां मक़ाम पर बिठाया जाएगा, हर कोई इस से

मिलने और बात चीत करने में फ़ख़्र मह़सूस करेगा जब कि मुझे कोई घास भी नहीं डालेगा। यूं ख़ुद साख़्ता इ़ज़्ज़त के जाते रहने का ख़ौफ़ इस के दिलो दिमाग़ पर छा जाता है। चुनान्चे, वोह मह़सूद की तरक़्क़ी पर जलने कुढ़ने और इस से ज़वाले ने'मत की तमन्ना करने लगता हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तीसरा सबब तकब्बुर

तकब्बुर जो ब ज़ाते ख़ुद एक ख़त़रनाक बात़िनी बीमारी है, येह भी **ह़सद** में मुब्तला करवा देता है क्यूंकि ह़ासिद फ़ित़री त़ौर पर दूसरों पर बरतरी चाहता और उन्हें ज़लील व ह़क़ीर समझता है और येह तवक़्क़ोअ़ रखता है कि कोई इस के सामने सर न उठा सके। वोह समझता है कि दुन्या की हर ने'मत और काम्याबी पर उस का ह़क़ है लिहाज़ा जब दूसरे शख़्स को ने'मत मिलती है तो उसे ख़ौफ़ होता है कि अब वोह इस की बात नहीं सुनेगा या इस की बराबरी का दा'वा करेगा या इस से बुलन्द मर्तबा हो जाएगा तो वोह इस से **ह़सद** करने लगता है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

चौथा सबब एह़सासे कमतरी

बा'ज़ अवक़ात इन्सान अपने मद्दे मुक़ाबिल को क़ुदरती सलाह़िय्यतों और ने'मतों से माला माल पाता है चुनान्चे, वोह भरपूर कोशिश के बा वुजूद इस से आगे निकलने में नाकाम रहता है। येह नाकामी उसे एह़सासे कमतरी में मुब्तला कर देती है और वोह मुसल्सल ज़ेह्नी दबाव का शिकार रहता है जिस का वाह़िद ह़ल उस की नज़र में येही होता है कि किसी त़रह़ सामने वाला भी उन ने'मतों

से मह़रूम हो जाए जो मुझे ह़ासिल नहीं हैं और यूं येह नादान **ह़सद** की दलदल में धंसता चला जाता है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पांचवां सबब **मक़्सद फ़ौत हो जाने का ख़ौफ़**

जब बहुत से लोग एक ही मक़ाम व मन्सब के ह़ुसूल के तमन्नाई हों तो वोह आपस में **ह़सद** में मुब्तला हो जाते हैं। शौहर का दिल जीतने के लिये सोतनों का एक दूसरे से **ह़सद** करना, मां बाप के दिल में जगह ह़ासिल करने के लिये भाइयों का एक दूसरे से **ह़सद** करना भी इसी ज़ुमरे में आता है। इसी त़रह़ शागिर्दों का उस्ताद के हां मक़ाम ह़ासिल करने के लिये एक दूसरे से **ह़सद** करना और बादशाह के दरबारियों का बादशाह के दिल में जगह पाने के लिये एक दूसरे से **ह़सद** भी इसी क़िस्म का होता है ताकि वोह माल और मर्तबा ह़ासिल करें। इसी त़रह़ **ह़सद** का इज़्हार इलेक्शन में भी ख़ूब होता है, अगर किसी की पोज़ीशन मज़बूत़ हो तो कमज़ोर नुमाइन्दा सिर्फ़ तमन्ना ही नहीं बल्कि पूरा ज़ोर लगाता है कि किसी त़रह़ मद्दे मुक़ाबिल की "पोज़ीशन नुमा ने'मत" उस से छिन कर मुझे मिल जाए और उस को मिलने वाली "कुरसी" मुझे ह़ासिल हो जाए। ख़्वाह इस की ख़ात़िर, ब्लेक मेइलिंग करनी पड़े, झूट बोलना पड़े, ग़लत़ अफ़वाहें उड़ानी पड़ें, ग़लत़ इलज़ामात धरने पड़े, वोटर ख़रीद ने पड़ें, या अस्लिह़ा की त़ाक़त इस्ति'माल करनी पड़े। अल ग़रज़ शैत़ान उस को बावला बना देता है और **ह़सद** के मारे वोह न कोई छोटा गुनाह छोड़ता है न बड़ा, **अल्लाह** व रसूल

عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللہُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم की ना फ़रमानी और आख़िरत की बरबादी की उसे कोई परवाह नहीं होती, नज़्अ़ की सख़्तियों, क़ब्र की वह़शतों, क़ियामत की होल नाकियों और जहन्नम के उठते हुए ख़ौफ़ नाक शो'लों से क़त़ए नज़र वोह सिर्फ़ "आरज़ी कुरसी" की ख़ात़िर सर धड़ की बाज़ी लगा देता है ! येह नादान इतना नहीं सोचता कि अगर दिल आज़ारियां, वोटरों की ख़रीदारियां और त़रह़ त़रह़ की धांदलियां करने में "कुरसी" पा भी गया तब भी बकरे की मां कब तक ख़ैर मनाएंगी ?" और मैं इस "कुरसी" पर कब तक बिराजमान रहूंगा ?

(माख़ूज अज़् "शैत़ान के चार गधे" स. 44)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمّد

छटा सबब — हुब्बे जाह

हुब्बे जाह भी **ह़सद** का एक सबब है, बा'ज़ अवक़ात कोई इन्सान अपने इ़ल्म, ह़ैसिय्यत, ओ़हदे, मर्तबे और दीगर सलाह़िय्यतों में मुम्ताज़ होता है। जब कोई उस की यूं ता'रीफ़ करे कि "जनाब ! आप तो यक्ताए ज़माना हैं, इस फ़न में आप का सानी नहीं" तो उसे बड़ा मज़ा आता है लेकिन जब इसे मा'लूम होता है कि दुन्या में कोई और भी उस का हम पल्ला है तो उसे बुरा लगता है और उस के दिल में ह़ासिदाना ख़यालात परवान चड़ने लगते हैं फिर वोह उस शख़्स की मौत या कम अज़् कम इस ने'मत का ज़वाल चाहता है जिस की वजह से वोह उस के मुक़ाबले में आया है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمّد

सातवां सबब

क़ल्बी ख़बासत

क़ल्बी ख़बासत भी **ह़सद** का सबब बनती है मसलन जब एक शख़्स के सामने किसी को मिलने वाली ने'मते इलाही का तज़किरा किया जाए तो उस के दिल में ख़्वाह म ख़्वाह जलन होने लगती है जब कि इस के बरअक्स किसी की बद ह़ाली या मुसीबत का ज़िक्र किया जाए तो वोह इस पर ख़ुश होता है। ऐसा शख़्स हमेशा दूसरों के नुक़्सान को पसन्द करता है और **अल्लाह** तआ़ला ने अपने बन्दों को जो ने'मतें अ़त़ा फ़रमाई हैं इन पर इस त़रह़ बुख़्ल करता है जैसे वोह ने'मतें उस के ख़ज़ाने से दी गई हों। इस क़िस्म के **ह़सद** का कोई ज़ाहिरी सबब नहीं होता सिर्फ़ ह़ासिद की नफ़्सानी ख़बासत और त़बई कमीनगी वजह बनती है, बहर ह़ाल **ह़सद** के इस सबब का इ़लाज बहुत मुश्किल है। (احیاء العلوم، ج ۳، ص ۲۳۴ تا ۲۳۸ ملتقطاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कौन किस से ह़सद करता है ?

यूं तो किसी को किसी से भी **ह़सद** हो सकता है लेकिन उस शख़्स से **ह़सद** हो जाने का इमकान ज़ियादा होता है जिस से इन्सान का ज़ियादा मेल जोल होता है या वोह इस का हमपेशा या हमपल्ला होता है या फिर इस से कोई क़रीबी तअ़ल्लुक़ होता है, मसलन ۞ ताजिर कारोबारी तरक़्क़ी की वजह से दूसरे ताजिर से **ह़सद** करता है किसी डॉक्टर से नहीं ۞ एक डॉक्टर इ़लाज में महारत व काम्याबी की वजह से दूसरे डॉक्टर से **ह़सद** करता है किसी ट्रान्सपोर्टर से नहीं ۞ एक ट्रान्सपोर्टर मुसाफ़िरों को अपनी त़रफ़ माइल कर लेने में काम्याबी की बिना पर दूसरे ट्रान्सपोर्टर से **ह़सद** करता है किसी सियासतदान से नहीं ۞ एक सियासतदान इन्तिख़ाबात में काम्याबी

और हुकूमती ओ़हदे की वजह से दूसरे सियासतदान से **ह़सद** करता है किसी त़ालिबे इ़ल्म से नहीं ۞ एक त़ालिबे इ़ल्म ज़हानत, अच्छे ह़ाफ़िज़े, इ़ल्मी मक़ाम, इम्तिह़ानात में मिलने वाली पोज़ीशन और उस्ताज़ की त़रफ़ से मिलने वाली शाबाश और दीगर सलाह़िय्यतों की वजह से दूसरे त़ालिबे इ़ल्म से ह़सद करता है किसी ना'त ख़्वां से नहीं ۞ एक ना'त ख़्वां अच्छी आवाज़, पुरसोज़ अन्दाज़ और नोटों की बरसात की वजह से दूसरे ना'त ख़्वां से तो मुब्तलाए **ह़सद** हो सकता है मद्रसे में पढ़ाने वाले किसी उस्ताज़ से नहीं ۞ एक उस्ताज़ अच्छे अन्दाज़े तदरीस और त़लबा व इन्तिज़ामिया में मक़्बूलिय्यत की वजह से दूसरे उस्ताज़ से तो **ह़सद** में मुब्तला हो जाता है किसी पीर साह़िब से नहीं ۞ एक पीर मुरीदों की कसरत और हर ख़ास व आ़म में मक़्बूलिय्यत की वजह से दूसरे पीर से **ह़सद** करता है किसी बिज़नेस मेन से नहीं ۞ एक बिज़नेस मेन खुली आमदनी, बंगला व गाड़ी, ऐ़शो इ़शरत, समाजी ह़ैसिय्यत, शख़्सिय्यात की नज़रों में मिलने वाले मक़ाम और ख़ानदान में मिलने वाली इ़ज़्ज़त की वजह से दूसरे बिज़नेस मेन से **ह़सद** करता है किसी आ़लिम से नहीं ۞ एक आ़लिम इ़ज़्ज़त व शोहरत, अ़क़ीदत मन्दों की कसरत, दौलत मन्दों की "शफ़्क़त", जल्से में कसीर सामेईन की शिर्कत और भारी भरकम अल्क़ाबात के साथ लोगों में मक़्बूलिय्यत की वजह से दूसरे आ़लिम से **ह़सद** में मुब्तला हो सकता है ۞ इस्लामी बहनों में लिबास व ज़ेवर, घर की आराइश व ज़ेबाइश, हुस्नो जमाल, सुसराल में अच्छा बरताव और पुर सुकून घरेलू ज़िन्दगी जैसी चीज़ें **ह़सद** की बुन्याद बनती हैं जिस से घरेलू साज़िशें जनम लेती हैं और घरों का माह़ोल कशीदा हो जाता है। इसी त़रह़ मुख़्तलिफ़ वुजूहात की बिना पर सास बहू, सगे भाई बहनों और क़रीबी रिश्तेदारों तक में **ह़सद** पैदा हो सकता है।

पीर भाई की शैख़ से ज़ियादा रसाई पर रन्ज करना कैसा ?

आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عليه رحمة الرحمن से अ़र्ज़ की गई कि अगर किसी मुरीद की अपने शैख़ से ज़ियादा रसाई हो उस पर इस के पीर भाई रन्ज रखे (तो येह कैसा है) ? इरशाद फ़रमाया : येह **ह़सद** है जो ले जाता है जहन्नम में । रब्बुल इ़ज़्ज़त तबारक व तआ़ला ने ह़ज़रते आदम على نبينا وعليه الصلوة والسلام को येह रुतबा दिया कि तमाम मलाइका से सजदा कराया, शैत़ान ने **ह़सद** किया वोह जहन्नम में गया ।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सा : 2 , स. 286)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ासिद की तीन निशानियां

ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते हैं कि ह़ासिद की तीन निशानियां हैं : (1) मह़सूद की मौजूदगी में चापलूसी (या'नी बे जा ता'रीफ़) करना (2) पीठ पीछे ग़ीबत करना (3) मह़सूद की मुसीबत पर ख़ुश होना । (منھاج العابدین، ص ۴۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या हम किसी के ह़सद में मुब्तला हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम में से हर एक को ग़ौर करना चाहिये कि ख़ुदा न ख़्वास्ता कहीं हम किसी से **ह़सद** तो नहीं करते ! इस के लिये ख़ुद को एक इम्तिह़ान (Test) से गुज़ारिये और अपने आप से चन्द सुवालात के जवाबात त़लब कीजिये : मसलन आप के रिश्तेदारों, मह़ल्ले वालों, दोस्त अह़बाब और मिलने जुलने

वालों अल ग़रज़ जिस जिस से आप का वासित़ा पड़ता है, उन में से कोई शख़्स ऐसा तो नहीं जिस की इ़ज़्ज़त व शोहरत, माल व दौलत, तक़्वा व इ़बादत, ज़हानत या दीगर ख़ुसूसिय्यात की वजह से आप दिल ही दिल में उस से जलते हों ? ۞ उस की किसी ने'मत के ज़वाल के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बद दुआ़एं करते हों ? ۞ उस शख़्स से मिलने से कतराते हों और अगर मिलना ही पड़े तो बे दिली के साथ मिलते हों ? ۞ उस की ता'रीफ़ सुनने का जी न चाहता हो ? ۞ उस की ता'रीफ़ सुन कर मारे जलन के आप की सांसें बे तरतीब हो जाती हों और फ़ौरन बात का रुख़ बदलने की कोशिश करते हों ? ۞ अगर मजबूरन खुद उस की ता'रीफ़ करनी पड़े तो मुर्दा दिली से करते हों ? ۞ उस की इ़ज़्ज़त व शोहरत के ज़वाल के लिये उस की मन्फ़ी बातों और ऐ़बों की तलाश व जुस्तुजू में मसरूफ़ रहते हों ? ۞ और अगर उस की कोई ग़लती या ख़ामी मिल जाए तो ख़ूब उछालते हों ? ۞ उस की ग़ीबत व चुग़ली करने और सुनने से सुकून ह़ासिल होता हो ? ۞ जब उसे कोई दीनी या दुन्यावी नुक़्सान पहुंचे तो आप ख़ुशी से फूले न समाते हों जब कि उसे ख़ुशी मिलने पर रन्जीदा व मलूल हो जाते हों ? ۞ उस की तरक़्क़ी पर आप आग के अंगारों पर लौटने लगते हों ? ۞ उस की सलाहिय्यतों का मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में मज़ाक़ उड़ाते हों ? ۞ उसे निगाहे ह़क़ारत से देखते हों ? ۞ उसे लोगों की नज़रों से भी गिराने की कोशिश करते हों ? ۞ जब उसे आप की मदद की ज़रूरत हो तो बा वुजूदे क़ुदरत इन्कार कर देते हों ? बल्कि कोशिश करते हों कि दूसरे भी इस की मदद न करने पाएं ? ۞ मौक़अ़ मिलने पर उसे नुक़्सान पहुंचाते हों ?

अगर इन सुवालात का जवाब हां में आए तो संभल जाइये कि **ह़सद** आप के दिल में घुस चुका है, इस से पहले कि येह आप को तबाह व बरबाद कर दे इसे निकाल बाहर कीजिये।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अपना बात़िन सुथरा रखिये

इन्सान में जहां बहुत सी ख़ूबियां पाई जाती हैं वहीं कुछ उ़यूब भी उस की ज़ात का ह़िस्सा होते हैं। बरोज़े क़ियामत जिस त़रह़ ज़ाहिरी उ़यूब पर गिरिफ़्त होगी इसी त़रह़ बात़िनी उ़यूब की भी पकड़ होगी, लिहाज़ा अपने ज़ाहिर के साथ साथ बात़िन को भी गुनाहों में मुब्तला होने से बचाना ज़रूरी है। क़ुरआने पाक में इरशाद होता है :

اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓىٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـٴُـوْلًا ۝ (پ ۱۵، بنی اسرائیل: ۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक कान और आंख और दिल इन सब से सुवाल होना है।*

अ़ल्लामा सय्यिद मह़मूद आलूसी बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی (अल मुतवफ़्फ़ा 1270 हि.) तफ़्सीरे रूहु़ल मा'नी में इस आयत के तह़्त लिखते हैं : येह आयत इसी बात पर दलील है कि आदमी के दिल के अफ़्आ़ल पर भी उस की पकड़ होगी मसलन किसी गुनाह का पुख़्ता इरादा कर लेना ..या.. दिल का मुख़्तलिफ़ बीमारियों मसलन कीना, **ह़सद** और ख़ुद पसन्दी वग़ैरा में मुब्तला हो जाना, हां उ़लमा ने इस बात की सराह़त फ़रमाई कि दिल में किसी गुनाह के बारे में मह़ज़ सोचने पर पकड़ न होगी जब कि इस के करने का पुख़्ता इरादा न रखता हो। (روح المعانی، پ ۱۵، الاسراء، تحت ۳۶، ج ۱۵، ص ۹۷)

मेरे दिल से दुन्या की चाहत मिटा कर
कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"जन्नत का रुख़ कर लीजिये" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से ह़सद के 14 इलाज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुछ बीमारियां वक़्त के साथ साथ ख़ुद ही ख़त्म हो जाती हैं जब कि बा'ज़ थोड़े बहुत इ़लाज से जाती रहती हैं लेकिन बा'ज़ अमराज़ ऐसे ख़त़रनाक होते हैं जिन के ख़ातिमे के लिये बा क़ाइ़दा और त़वील इ़लाज की ज़रूरत होती है, इन्ही में से एक "**ह़सद**" भी है। इस का इ़लाज मुश्किल ज़रूर है ना मुमकिन नहीं, दर्जे ज़ैल तदाबीर इख़्तियार कर के **ह़सद** से जान छुड़ाई जा सकती है :

۞ तौबा कर लीजिये ۞ दुआ़ कीजिये ۞ रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहिये ۞ **ह़सद** की तबाह कारियों पर नज़र रखिये ۞ अपनी मौत को याद कीजिये ۞ **ह़सद** का सबब बनने वाली ने'मतों पर ग़ौर कीजिये ۞ लोगों की ने'मतों पर निगाह न रखिये ۞ **ह़सद** से बचने के फ़ज़ाइल पर नज़र रखिये ۞ अपनी ख़ामियों की इस्लाह़ में लग जाइये ۞ **ह़सद** की आ़दत को रश्क में तब्दील कर लीजिये ۞ नफ़रत को मह़ब्बत में बदलने की तदबीर कीजिये ۞ दूसरों की ख़ुशी में ख़ुश रहने की आ़दत बना लीजिये ۞ रूह़ानी इ़लाज भी कीजिये ۞ मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये। (इन सब की तफ़्सील आगे आ रही है)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾1﴿ तौबा कर लीजिये

सब से पहले अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में **ह़सद** बल्कि हर गुनाह से तौबा कर लीजिये कि "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे सामने इक़रार करता हूं कि मैं अपने फुलां इस्लामी भाई से **ह़सद** करता था, मुझे मुआ़फ़ कर दे, मैं पुख़्ता इरादा करता हूं कि तेरी अ़ता से ता दमे ह़यात **ह़सद** व दीगर गुनाहों से बचता रहूंगा।" اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस तौबा की बरकत से आ'माल नामा साफ़ हो जाएगा क्यूंकि सच्ची तौबा हर क़िस्म के गुनाह को इन्सान के नामए आ'माल से धो डालती है, चुनान्चे सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ या'नी गुनाहों से तौबा करने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जिस के ज़िम्मे कोई गुनाह न हो।

(السنن الکبریٰ للبیہقی، الحدیث:۲۰۵۶۱، ج۱۰، ص۲۵۹)

मुझे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे दे

पए ताजदारे ह़रम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿ दुआ़ कीजिये

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ या'नी दुआ़ मोमिन का हथियार है। (مسند ابویعلی، ج ۲، ص ۲۰۱، الحدیث: ۱۸۰۶) हमें चाहिये कि इस हथियार को **ह़सद** के ख़िलाफ़ इस्ति'माल करें और **ह़सद** से नजात के लिये बारगाहे रब्बे काइनात عزوجل में गिड़गिड़ा कर दुआ़ मांगें कि या रब्बल आ़लमीन عزوجل ! मैं तेरी रिज़ा के लिये **ह़सद** से छुटकारा पाना चाहता हूं, तू मुझे इस बात़िनी बीमारी से शिफ़ा दे दे और मुझे **ह़सद** से बचने में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा,

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
बुरी आ़दतें भी छुड़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 79)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾3﴿ रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहिये

तमाम जहानों के ख़ालिक़ व मालिक عزوجل ने जिस को जो ने'मत अ़त़ा की है, उस की तक़्सीम पर राज़ी रहने की आ़दत डालिये और अपना येह जेहन बना लीजिये कि उस को येह ने'मतें रब्बे करीम ने दी हैं और वोह इस पर क़ादिर है कि जिस को जिस वक़्त जितना चाहे अ़त़ा करे ! मुझे ए'तिराज़ का कोई ह़क़ नहीं पहुंचता ! सूरतुन्निसा की आयत 32 में **अल्लाह** عزوجل का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ (پ۵، النساء: ۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उस की आरज़ू न करो जिस से **अल्लाह** ने तुम में एक को दूसरे पर बड़ाई दी ।*

इस आयते पाक के तह़्त "तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान" में सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عليه رحمة الله الهادى लिखते हैं : (येह आरज़ू करना) ख़्वाह दुन्या की जहत (या'नी जानिब) से हो या दीन की ! ताकि आपस में बुग़्ज़ व **ह़सद** पैदा न हो । **ह़सद** निहायत बुरी चीज़ है । **ह़सद** वाला दूसरे को अच्छे ह़ाल में देखता है तो अपने लिये इस की ख़्वाहिश रखता है और साथ में येह भी चाहता है कि उस का भाई इस ने'मत से मह़रूम हो जाए, येह मम्नूअ़ है, बन्दे को चाहिये कि **अल्लाह** ताआ़ला की तक़्दीर पर राज़ी रहे, उस ने जिस बन्दे को जो फ़ज़ीलत दी, ख़्वाह दौलत व ग़िना की या दीनी मनासिब व मदारिज की, येह इस की ह़िक्मत है । (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 163)

थोड़ा मिले या ज़ियादा ! हमें हर ह़ाल में **अल्लाह** तआ़ला की तक़्सीम पर राज़ी रहना चाहिये । **अल्लाह** عزوجل के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صلى الله تعالى عليه واله وسلم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عزوجل इरशाद फ़रमाता है :

فَلْيَلْتَمِسْ رَبًّا غَيْرِيْ مَنْ لَّمْ يَرْضَ بِقَضَائِيْ وَقَدَرِيْ

या'नी जो मेरे फ़ैसले और मेरी तक़्दीर पर राज़ी नहीं उसे चाहिये कि मेरे इ़लावा दूसरा रब तलाश कर ले ।"

(شعب الایمان، ج۱، ص۲۱۸، الحدیث:۲۰۰)

सदा के लिये हो जा राज़ी ख़ुदाया
हमेशा हो लुत़्फ़ो करम या इलाही (वसाइले बख़्शिश, स. 82)

﴾4﴿ ह़सद की तबाह कारियों पर नज़र रखिये

ह़सद की होलनाक तबाह कारियों और ख़ौफ़नाक नुक़्सानात को ज़ेह्न में दोहराते रहिये कि क्या मैं **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की नाराज़ी गवारा कर सकता हूं ? ईमान की दौलत छिन जाने और हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम में रहने का ख़त़रा मोल ले सकता हूं ? क्या नेकियां ज़ाएअ़ हो जाने का नुक़्सान बरदाश्त कर सकता हूं ? **ह़सद** के होते हुए ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी जैसे मुख़्तलिफ़ गुनाहों से बच सकता हूं ? सिलए रेह़मी, इ़यादत, ता'ज़ियत, मुसलमान की ह़ाजत रवाई जैसी नेकियों के सवाब से मह़रूम रहने की नादानी कर सकता हूं ? बिग़ैर ह़िसाब जहन्नम में दाख़िला मुझे गवारा होगा ? हर वक़्त की टेन्शन, उदासी और जिस्मानी बीमारियों में मुब्तला रह कर खुश रह सकता हूं ? यक़ीनन नहीं ! तो इस **ह़सद** से सेंकडों मील दूर हो जाइये ।

मेरी आ़दतें हों बेहतर बनूं सुन्नतों का पैकर
मुझे मुत्तक़ी बनाना, मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 287)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾5﴿ अपनी मौत को याद कीजिये

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہ تعالٰی عنہُ से रिवायत है : مَنْ اَکْثَرَ ذِکْرَ الْمَوْتِ قَلَّ حَسَدُہٗ وَقَلَّ فَرَحُہٗ जो मौत को कसरत के साथ याद करे उस के **ह़सद** और खुशी में कमी आ जाएगी ! (مصنف ابن ابی شیبۃ ج۸،ص۱۶۷،الحدیث۳) लिहाज़ा अपनी मौत को ब कसरत याद

कीजिये कि अ़न क़रीब किसी भी लम्ह़े किसी भी पल मुझे येह दुन्या छोड़ कर अन्धेरी क़ब्र में उतर जाना है, तो फिर मैं इस दुन्या की आ़रिज़ी चीज़ों की वजह से किसी से **ह़सद** कर के अपनी आख़िरत क्यूं ख़राब करूं ?

नीम जां कर दिया गुनाहों ने

मर्ज़े इस्यां से दे शिफ़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 87)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾6﴿ ह़सद का सबब बनने वाली ने'मतों पर ग़ौर कीजिये

येह भी ग़ौर कीजिये कि जिन ने'मतों पर आप को **ह़सद** मह़सूस होता है वोह दीनी हैं या दुन्यावी ? अगर माल व दौलत, इ़ज़्ज़त व शोहरत जैसी दुन्यावी चीजें आप को **ह़सद** पर मजबूर करती हैं तो याद रखिये कि येह ने'मतें आ़रिज़ी हैं जो आप के पास हों या किसी और के पास ! बिल आख़िर मौत आते ही छिन जाएंगी ! इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى नक़्ल करते हैं : दुन्या को इन्तिहाई बद सूरत बुढ़िया की शक्ल में लाया जाएगा और लोगों से कहा जाएगा : "क्या तुम इस को पहचानते हो ?" वोह कहेंगे : "हम इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं।" तो उन से कहा जाएगा : "येही वोह दुन्या है जिस से तुम मह़ब्बत करते थे, इसी के लिये आपस में **ह़सद** किया करते थे और इस की वजह से एक दूसरे पर ग़ज़ब व ग़ुस्सा करते थे।"

(احیاء العلوم، کتاب ذم الدنیا، بیان صفۃ الدنیا بالامثلۃ، ج ۳، ص ۲۶۵)

या रब्बे मुह़म्मद मेरी तक़्दीर जगा दे   सह़राए मदीना मुझे आंखों से दिखा दे
पीछा मेरा दुन्या की मह़ब्बत से छुड़ा दे   या रब मुझे दीवाना मदीने का बना दे

(वसाइले बख़्शिश, स.100)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मैं दुन्यवी चीज़ की वजह से क्यूं ह़सद करूं?

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सीरीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मैं ने किसी से दुन्यवी शै की वजह से **ह़सद** नहीं किया क्यूंकि अगर वोह शख़्स जन्नती है तो मैं दुन्या की वजह से उस से **ह़सद** कैसे करूं हालांकि दुन्या जन्नत के मुक़ाबले में बहुत ह़क़ीर है, और अगर वोह जहन्नमी है तो मैं दुन्यवी शै की वजह से उस से **ह़सद** कैसे करूं जब कि वोह खुद जहन्नम में जाने वाला है।" (الزواجر عن اقتراف الكبائر، ج١،ص١١٦)

मैं ने कभी किसी से ह़सद नहीं किया

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن आ़जिज़ी करते हुए फ़रमाते हैं : फ़क़ीर में लाखों ऐ़ब हैं मगर मेरे रब ने मुझे **ह़सद** से बिल्कुल पाक रखा है, अपने से जिसे ज़ियादा पाया अगर दुन्या के माल व मनाल में ज़ियादा है क़ल्ब ने अन्दर से उसे ह़क़ीर जाना, फिर **ह़सद** क्या ह़क़ारत पर ? और अगर दीनी शरफ़ व अफ़्ज़ाल में ज़ियादा है उस की दस्त बोसी व क़दम बोसी को अपना फ़ख़्र जाना फिर **ह़सद** क्या अपने मुअ़ज़्ज़मे बा बरकत पर ? अपने में जिसे ह़िमायते दीन पर देखा उस के नशरे फ़ज़ाइल (या'नी फ़ज़ाइल को

फैलाने) और ख़ल्क़ को उस की त़रफ़ माइल करने में तह़रीरन व तक़रीरन साई रहा। उस के लिये उ़म्दा अल्क़ाब वज़्अ़ कर के शाएअ़ किये जिस पर मेरी किताब "اَلْمُعْتَمَدُ الْمُسْتَنَدُ" वग़ैरा शाहिद (या'नी गवाह) हैं, **ह़सद** शोहरत त़लबी से पैदा होता है और मेरे रब्बे करीम के वज्हे करीम के लिये ह़म्द है कि मैं ने कभी इस के लिये ख़्वाहिश न की बल्कि हमेशा इस से नफ़ूर (या'नी बचता) और गोशा नशीनी का दिल दादह रहा। (फ़तावा रज़विय्यह, जि.29, स. 598)

अल्लाह عزّوجلّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो*

امین بجاہِ النّبیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जिसे अल्लाह इ़ज़्ज़त दे उस से ह़सद न करो

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : ऐ इब्ने आदम ! अपने भाई से **ह़सद** न कर क्यूंकि अगर **अल्लाह** عزّوجلّ ने उस की तकरीम के लिये वोह ने'मत उसे अ़त़ा फ़रमाई है तो जिसे रब्बुल आ़लमीन عزّوجلّ इ़ज़्ज़त दे उस से **ह़सद** न करो। (الزواجر عن اقتراف الکبائر، ج۱،ص۱۱۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾7﴿ लोगों की ने'मतों पर नज़र न रखिये

दूसरों की ने'मतों के बारे में ज़ियादा सोचना छोड़ दीजिये क्यूंकि अपने से ज़ियादा ने'मतों वाले के बारे में सोचते रहने से अक्सर एह़सासे कमतरी पैदा होता है जिस से **ह़सद** जनम लेता है, लिहाज़ा इस ह़दीसे पाक को ह़िर्ज़े जान बना लीजिये कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का फ़रमाने नसीह़त

निशान है : अपने से नीचे के दरजे वालों की त़रफ़ देखा करो ऊपर के दरजे के लोगों की त़रफ़ नज़र मत करो, अगर तुम इस त़रह़ करोगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किसी भी ने'मत को ह़क़ीर न जानोगे।

(سنن ابن ماجہ،حدیث۴۱۴۲،ج۴،ص۴۴۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾8﴿ ह़सद से बचने के फ़ज़ाइल पर नज़र रखिये

ह़सद से बचने के फ़ज़ाइल व फ़वाइद पर नज़र रखने की बरकत से इ़लाज में इस्तिक़ामत नसीब होगी। बत़ौरे तरग़ीब पांच फ़ज़ाइल मुलाह़ज़ा कीजिये :

(1) सब से अफ़्ज़ल कौन ?

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : "लोगों में सब से अफ़्ज़ल कौन है ?" इरशाद फ़रमाया : "ज़बान का सच्चा और मख़्मूमुल क़ल्ब मुसलमान।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह तो हम जानते हैं कि ज़बान का सच्चा कौन होता है लेकिन "मख़्मूमुल क़ल्ब" से क्या मुराद है ?" इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला हर क़िस्म के गुनाह, सरकशी, धोकादेही और **ह़सद** से बचने वाला।

(سنن ابن ماجہ، ج۴،ص۴۷۵،الحدیث:۴۲۱۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(2) तुम जन्नत में मेरे साथ रहोगे

एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की :

या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मैं सिर्फ़ एक महीने के रोज़े रखता हूं इस पर इज़ाफ़ा नहीं करता, और सिर्फ़ पांच नमाज़ें पढ़ता हूं इस से ज़ियादा नहीं पढ़ता और मेरे माल में ज़कात फ़र्ज़ नहीं और न ही मुझ पर ह़ज फ़र्ज़ है और न ही नफ़्ल ह़ज करता हूं, मैं मरने के बा'द कहां जाऊंगा? रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया : तुम जन्नत में मेरे साथ होंगे जब कि तुम अपने दिल को दो बातों या'नी ख़ियानत और **ह़सद** से बचाओ और अपनी ज़बान को दो बातों या'नी ग़ीबत और झूट से और दो बातों से आंखों को बचाओ या'नी जिस की त़रफ़ नज़र करना **अल्लाह** तआ़ला ने ह़राम क़रार दिया है उस की त़रफ़ न देखो और किसी मुसलमान को ह़क़ारत से न देखो। (قوت القلوب ج۱ص۳۳۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) सायए अ़र्श में किस को देखा!

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने एक शख़्स को अ़र्श के साये में देखा। अ़र्ज़ की : मौला عَزَّوَجَلَّ इस को येह दरजा किस अ़मल से ह़ासिल हुवा? इरशादे इलाही हुवा कि तीन अ़मलों से : **पहला :** येह किसी पर **ह़सद** न करता था, **दूसरा :** येह अपने मां बाप का फ़रमां बरदार था, **तीसरा :** येह चुग़ुल ख़ोरी से मह़फ़ूज़ था।

(مكارم الاخلاق ص۱۸۳، الحديث:۲۵۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) जन्नती शख़्स

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ इरशाद फ़रमाते हैं कि

एक मरतबा हम सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صلى الله تعالى عليه و اله وسلم की बारगाहे अक्दस में ह़ाज़िर थे कि आप صلى الله تعالى عليه و اله وسلم ने इरशाद फ़रमाया : "अभी इस दरवाज़े से एक जन्नती शख़्स दाखि़ल होगा।" तो एक अन्सारी शख़्स दाखि़ल हुवा जिस की दाढ़ी वुज़ू की वजह से तर थी और उस ने अपने जूते बाएं हाथ में लटका रखे थे, उस ने ह़ाज़िरे बारगाह हो कर सलाम अ़र्ज़ किया। फिर जब दूसरा दिन आया तो **अल्लाह** के मह़बूब दानाए गुयूब मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صلى الله تعالى عليه و اله وسلم ने वोही बात इरशाद फ़रमाई कि अभी इस दरवाज़े से एक जन्नती मर्द दाखि़ल होगा।" तो वोही शख़्स पहले की त़रह़ ह़ाज़िरे बारगाहे अक्दस हुवा, फिर जब तीसरा दिन आया तो आप صلى الله تعالى عليه و اله وسلم ने येही बात इरशाद फ़रमाई तो ह़स्बे मा'मूल वोही शख़्स दाखि़ल हुवा, फिर जब दाफ़ए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صلى الله تعالى عليه و اله وسلم तशरीफ़ ले गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رضی اللہ تعالی عنہ उस शख़्स के पीछे चल दिये और किसी तरकीब से उस के पास तीन रात क़ियाम फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رضی اللہ تعالی عنہ फ़रमाते हैं : मैं ने वोह तीन रातें उस के साथ गुज़ारीं लेकिन रात के वक़्त उसे कोई इ़बादत करते हुए न देखा, हां! मगर जब वोह बेदार होता या करवट बदलता तो **अल्लाह** عزوجل का ज़िक्र करता और अल्लाहु अकबर कहता और जब नमाज़ का वक़्त हो जाता तो बिस्तर से उठ जाता और मैं ने उसे अच्छी बात के इ़लावा कुछ कहते हुए न सुना, फिर जब तीन दिन गुज़र गए तो मैं ने उसे बिशारते मुस्त़फ़ा صلى الله تعالى عليه و اله وسلم

के बारे में बताया कि मैं ने मदनी आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم को तुम्हारे बारे में तीन मरतबा येह कहते हुए सुना : "अभी तुम्हारे पास एक जन्नती शख़्स आएगा ।" तो तीनों मरतबा तुम ही आए तो मैं ने सोचा कि तुम्हारे पास रह कर देखूं कि तुम्हारा अ़मल क्या है ? ताकि मैं भी तुम्हारी पैरवी कर सकूं मगर मैं ने तो तुम्हें कोई ख़ास बड़ा अ़मल करते हुए नहीं देखा फिर तुम्हें इस मक़ाम तक किस अ़मल ने पहुंचाया ? तो उस ने कहा : "मेरा अ़मल तो वोही है जो तुम ने देख लिया मगर मैं अपने दिल में किसी मुसलमान से बद दियानती नहीं पाता और न ही **अल्लाह** عزوجل की अ़ता़कर्दा भलाई पर किसी से **ह़सद** करता हूं ।" येह सुन कर मैं ने कहा : बस येही वोह आ'माल हैं जिन्हों ने तुझे इस मक़ाम तक पहुंचा दिया ।

(شعب الایمان، الحدیث: ۶۶۰۵، ج ۵، ص ۲۶۴، ۲۶۵، بتغیر قلیل)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5) लम्बी उ़म्र का राज़

इमाम अस्मई عليه رحمة الله القوى से मरवी है कि मैं ने एक देहाती शख़्स को देखा जिस की उ़म्र एक सो बीस साल थी । मैं ने ह़ैरत का इज़्हार किया की तुम ने बहुत त़वील उ़म्र पाई है ! तो उस ने जवाब दिया : मैं **ह़सद** से बचता रहा, येह इस की बरकत है ।

(الرسالۃ القشیریۃ، ص ۱۹۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

《9》 अपनी ख़ामियों की इस्लाह़ में लग जाइये

इन्सान की ज़ात ख़ूबियों और ख़ामीयों का मज्मूआ़ होती है,

अपनी ख़ामीयों पर क़ाबू पा कर ही ख़ूबियों की हि़फ़ाज़त व आबयारी की जा सकती है मगर दूसरों की ख़ूबियों पर जलने कुढ़ने वाला अपनी ख़ामियों की इस्लाह़ से मह़रूम रह जाता है और नुक़्सान उठाता है। अगर हम अपनी इस्लाह़ की कोशिश में लग जाएं तो **ह़सद** जैसे बुरे काम के लिये हमें फ़ुरसत ही नहीं मिलेगी यूं हम इस से बचने में काम्याब हो जाएंगे। मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عليه رحمة الله الحنّان फ़रमाते हैं : नफ़्स में सात ऐ़ब हैं : (1) खुद पसन्दी (2) ग़ुरूर (3) रियाकारी (4) ग़ुस्सा (5) **ह़सद** (6) माल की मह़ब्बत और (7) इ़ज़्ज़त की चाहत और दोज़ख़ के दरवाज़े भी सात है। जो इन सात ऐ़बों को निकाले उस पर ان شاء الله عزوجل ! येह दरवाज़े बन्द होंगे। (تفسیر نعیمی ج۱،ص۵۳۰)

हर भले की भलाई का सदक़ा

मुझ बुरे को भी कर भला या रब

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾10﴿ ह़सद की आदत को रश्क में तब्दील कर लीजिये

ह़सद को रश्क में तब्दील कर के भी इस के नुक़्सानात से बचा जा सकता है मसलन किसी से उस के मज़बूत ह़ाफ़िज़े की वजह से **ह़सद** है तो **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ कीजिये कि उस के ह़ाफ़िज़े में मज़ीद बरकतें दे और ऐसा ह़ाफ़िज़ा मुझे भी अ़ता फ़रमा दे।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾11﴿ नफ़रत को मह़ब्बत में बदलने की तदबीरें कीजिये

ह़ासिद को चूंकि "मह़सूद"(या'नी जिस से **ह़सद** किया जाए उस) से सख़्त नफ़रत हो जाती है लिहाज़ा इस नफ़रत को मह़ब्बत से बदलने की येह तदबीरें करे :

۞ उस से सलाम में पहल करे ۞ मुलाक़ात हो तो गर्म जोशी का मुज़ाहरा करे ۞ मुमकिन हो तो कभी कभी तह़ाइफ़ पेश करे ۞ उस की जिस ने'मत के बाइ़स **ह़सद** होता हो उस में बरकत की दुआ़ करे ۞ उस की बदगोई से बचे बल्कि दूसरा भी बुराई करे तो न सुने ۞ बीमारी या मुसीबत में उस की ता'ज़िय्यत करे ۞ ख़ुशी के मौक़अ़ पर मुबारकबाद पेश करे ۞ ज़रूरत के मौक़अ़ पर उस की मदद करे ۞ लोगों के सामने उस की ब कसरत जाइज़ ता'रीफ़ करे ۞ दूसरा उस की जाइज़ ता'रीफ़ करे तो ख़ुशी का इज़हार करे ۞ अपनी त़रफ़ से जिस क़दर फ़ाइदा पहुंचा सकता हो मह़सूद को पहुंचाए।

ऐ़न मुमकिन है कि शुरूअ़ शुरूअ़ में मज़कूरा बाला तदबीरें नफ़्स पर बहुत गिरां हों लेकिन ब तकल्लुफ़ बार बार करने से इन की आ़दत हो जाएगी और اِن شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ **ह़सद** से जान छूट जाएगी।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सर का बोसा ले लिया

क़ाज़ी तनूख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللهِ الْقَوِی का बयान है : एक मरतबा जुमुआ़ के दिन नमाज़े जुमुआ़ से कुछ देर क़ब्ल मैं "जामेअ़ मन्सूर" में मौजूद था, मेरी सीधी त़रफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन त़ल्ह़ा बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللهِ الْقَوِی थे, मैं ने नज़र उठा कर देखा तो मेरे बहुत ही क़रीबी

दोस्त अ़ब्दुस्समद भी कुछ फ़ासिले पर बैठे हुए थे। एक दम वोह उठे और मेरी त़रफ़ बढ़ने लगे, मैं भी उठ खड़ा हुवा। येह देख कर कहने लगे : क़ाज़ी साहिब ! आप तशरीफ़ रखिये, मैं आप के लिये नहीं बल्कि अ़ली बिन त़ल्ह़ा (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ) की ख़ात़िर उठ कर आया हूं और इस की वजह येह है कि मेरे नफ़्स ने मुझे इन के मुतअ़ल्लिक़ **ह़सद** में मुब्तला करने की कोशिश की और इन्हें देख कर मेरे नफ़्स को ना गवारी मह़सूस हुई तो मैं ने ठान ली कि मैं अपने नफ़्स की बात न मान कर इस को ज़लील व रुस्वा करूंगा और अ़ली बिन त़ल्ह़ा (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ) के पास ज़रूर जाऊंगा। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन त़ल्ह़ा رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ खड़े हो गए और प्यार से उन का माथा चूम लिया। (عیون الحکایات، ص ۳۳۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾12﴿ दूसरों की ख़ुशी में ख़ुश रहने की आ़दत बना लीजिये

ख़ालिक़े काइनात की मख़्लूक़ात पर ग़ौर किया जाए तो साफ़ दिखाई देता है कि चरिन्द हों या परिन्द, ह़ैवानात हों या नबातात इस त़रह़ इन्सान को **अल्लाह** तआ़ला ने हू बहू एक जैसा नहीं बनाया बल्कि इन में मुख़्तलिफ़ ए'तिबारात से फ़र्क़ रखा है मसलन हर चोपाया घास नहीं खाता, हर परिन्दा ऊंचा नहीं उड़ता, हर दरख़्त फल नहीं देता, यूंही इन्सानों को भी एक दूसरे पर फ़ौक़िय्यत ह़ासिल होती है इन में से कोई किसी ख़ूब सूरती व हुस्न का शाहकार तो कोई बद सूरती का नमूना, कोई ख़ूबियों का मुरक़्क़अ़ तो कोई ख़ामियों का पैकर, कोई इ़ल्म का समुन्दर तो कोई जहालत का जोहड़, कोई सन्अ़त व ह़िरफ़त में माहिर तो कोई अनाड़ी व फौहड़, कोई ख़ुश इल्ह़ान तो कोई भूंडा,

कोई ज़ेह्नी कुव्वत का ह़ामिल तो कोई जिस्मानी ! अब जो शख़्स दूसरे को फ़ौक़िय्यत मिलने पर वावेला मचाए और अपना दिल जलाए नुक़्सान उसी का होगा। ज़रा सोचिये कि किसी की ख़ूब सूरती पर **ह़सद** करने से आप ह़सीन व जमील बन जाएंगे ? किसी की ज़हानत छिन जाने से आप ज़हीन व फ़त़ीन हो जाएंगे ? किसी की दौलत छिन जाने से आप अमीर हो जाएंगे ? इस बात की क्या गेरन्टी है कि वोह चीज़ उस से छिन कर आप को मिल जाएगी तो फिर क्या वजह है कि आप उसे आगे बढ़ता देख नहीं सकते ? क्यूं किसी की ने'मतों की पामाली के ख़्वाहां हैं ? क्यूं **ह़सद** जैसे ख़त़रनाक मरज़ को अपने अन्दर जगह देते हैं ?अगर इन तमाम बातों की जगह आप दूसरों की ने'मतों पर खुश होना सीख लें तो **ह़सद** आप के दिल का रास्ता भूल जाएगा ?

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾13﴿ रूह़ानी इलाज भी कीजिये

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुलल्लि आलमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : तीन बीमारियां मेरी उम्मत को ज़रूर होंगी : **ह़सद**, बद गुमानी और बद फ़ाली, क्या मैं तुम्हें इन से छुटकारे का त़रीक़ा न बता दूं? जब तुम में बद गुमानी पैदा हो तो उस पर यक़ीन न करो, और जब तुम **ह़सद** में मुब्तला हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार कर लिया करो और जब बद शुगूनी पैदा हो तो उस काम को कर गुज़रो। (المعجم الكبير، الحديث: ٣٢٢٧، ج ٣، ص ٢٢٨، تقدما تاخرا)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **ह़सद** से बचने के लिये बयान कर्दा मुआ़लजात के साथ साथ ह़स्बे तौफ़ीक़ अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ के साथ येह 7 रूह़ानी इ़लाज भी कीजिये :

﴾1﴿ जब भी दिल में **ह़सद** का ख़याल आए तो "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم" एक बार पढ़ने के बा'द उलटे कन्धे की त़रफ़ तीन बार थू थू कर दीजिये

﴾2﴿ रोज़ाना दस बार "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم" पढ़ने वाले पर शैत़ान से ह़िफ़ाज़त करने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर कर देता है।

﴾3﴿ सूरतुल इख़्लास ग्यारह बार सुब्ह़ (आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह़ है) पढ़ने वाले पर अगर शैत़ान मअ़ लश्कर के कोशिश करे कि इस से गुनाह कराए तो न करा सके जब तक कि येह (पढ़ने वाला) ख़ुद न करे। (الوظیفۃ الکریمہ ص ۲۱)

﴾4﴿ सूरतुन्नास पढ़ लेने से भी वस्वसे दूर होते हैं।

﴾5﴿ मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "सूफ़िियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि जो कोई सुब्ह़ शाम इक्कीस इक्कीस बार "ला ह़ौल शरीफ़" पानी पर दम कर के पी लिया करे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ वस्वसए शैत़ानी से बहुत ह़द तक अम्न में रहेगा।"

﴾6﴿ هُوَ الْاَوَّلُ وَ الْاٰخِرُ وَ الظَّاهِرُ وَ الْبَاطِنُ ۚ وَ هُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ۝ (پ۲۷، الحدید:۳) कहने से फ़ौरन वस्वसा दूर हो जाता है।

﴾7﴿ سُبْحٰنَ الْمَلِکِ الْخَلَّاقِ، ﴿اِنْ یَّشَاْ یُذْهِبْكُمْ وَ یَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِیْدٍ ۝ وَّ مَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِیْزٍ ۝﴾ (پ۱۳، ابراھیم:۱۹، ۲۰)

की कसरत इसे या'नी वस्वसे को जड़ से क़त्अ़ कर (या'नी काट) देती है। (मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि.1, स. 770)

﴿इस दुआ़ के ह़िस्सए आयत को आप की मा'लूमात के लिये मुन्क़श हिलालैन और रस्मुल ख़त़ की तब्दीली के ज़रीए वाज़ेह़ किया है﴾

(माख़ूज़ अज़ नेकी की दा'वत, स. 104 ता 106)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿14﴾ मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ए कार पर मुश्तमिल शरीअ़त व त़रीक़त का जामेअ़ मज्मूआ़ बनाम "मदनी इन्आ़मात" ब सूरते सुवालात मुरत्तब किया है। इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63, त़लबए इ़ल्मे दीन के लिये 92, दीनी त़ालिबात के लिये 83, मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों के लिये 40 जब कि ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों (या'नी गूंगे बहरों) के लिये 27 मदनी इन्आ़मात हैं। बे शुमार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और त़लबा मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल "फ़िक्रे मदीना करते हुए" या'नी अपने आ'माल का जाइज़ा ले कर मदनी इन्आ़मात के जैबी साइज़ रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर करते हैं। इन मदनी इन्आ़मात को इख़्लास के साथ अपना लेने के बा'द नेक बनने और गुनाहों से बचने की राह में ह़ाइल रुकावटें **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से अकसर दूर हो जाती हैं और इन की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ

पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न भी बनता है। इन मदनी इन्आ़मात में से एक मदनी इन्आ़म **ह़सद** से बचने के बारे में भी है, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 30 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**72** मदनी इन्आ़मात" के सफ़ह़ा 13 पर मदनी इन्आ़म नम्बर 38 है : "क्या आज आप झूट, ग़ीबत, चुग़ली, **ह़सद**, तकब्बुर और वा'दा ख़िलाफ़ी से बचने में कामयाब हुए?"

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक बयान ने मेरी ज़िन्दगी बदल दी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अपने ज़ाहिर व बात़िन को गुनाहों से बचाने की कोशिश के लिये दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मदनी माह़ोल की बरकत से बे शुमार इस्लामी भाइयों की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया। आइये, मैं आप को ऐसी ही एक मदनी बहार सुनाता हूं, चुनान्चे एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है : हमारे ख़ानदान के अकसर लोग तिजारत से वाबस्ता थे मगर मैं पढ़ाई में तेज़ निकला और छोटी सी उ़म्र में ही एफ़.ए (F. A) का इम्तिह़ान अच्छे नम्बरों से पास कर लिया। मेरी ज़हानत देख कर मेरे घर वालों ने मुझे हर त़रह़ की आज़ादी दे रखी थी कि येह पढ़ लिख कर बड़ा आदमी बनेगा और हमारा नाम रोशन करेगा। इसी आज़ादी के तुफ़ैल मैं ने डान्स सीखा, सेंकड़ों गाने सुने और दिन में कई कई फ़िल्में देखीं जिस का नतीजा येह निकला कि कालेज में नित

नए फ़ैशन के लिबास पहन कर और अ़जीब स्टाइल के बाल बना कर जाता। मेरे कमरे की दीवारों पर फ़िल्मी अदाकाराओं की बड़ी बड़ी तस्वीरें आवेज़ां रहती थीं। त़बीअ़त की शोख़ी और हंसी मज़ाक़ में मह़ल्ले भर में मेरा सानी न था। घर की छत पर खड़ा हो कर बद निगाही करना मेरा मा'मूल था। मेरे येह लच्छन देख कर घर वाले "आज़ादी" देने पर पछताने लगे और मुझे समझाना चाहा लेकिन मेरे तो मज़े थे लिहाज़ा मैं ने उन की बात एक कान से सुन कर दूसरे कान से निकाल दी। फिर 1990 सि. ई. का साल आ पहुंचा और मेरे नसीब चमके, हुवा यूं कि एक इस्लामी भाई ने मेरे मामूं ज़ाद भाई को शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دامت برکاتہم العالیہ के बयान की एक केसेट "क़ब्र की पुकार" सुनने के लिये दी, मेरे कज़िन ने वोह केसेट कुछ दिन रखने के बा'द बिग़ैर सुने वापस करने के लिये मुझे दे दी। जब मैं ने उस इस्लामी भाई को केसेट वापस करना चाही तो उन्हों ने बड़ी मह़ब्बत से मुझ से दरख़्वास्त की, कि मैं इस बयान को सुन लूं, मैं ने येह सोच कर रख ली कि कुछ दिनों बा'द मैं भी बिग़ैर सुने वापस कर दूंगा। फिर एक दिन जब मैं घर की छत पर बद निगाही में मसरूफ़ था, मैं ने गाने सुनने के लिये केसेट निकालना चाही तो मेरे हाथ में बयान की केसेट आ गई। मैं ने सोचा कि सुनूं तो सही कि ह़ज़रत क्या फ़रमाते हैं ? मैं ने बयान सुनना शुरूअ़ किया तो अपने इर्द गिर्द से बे ख़बर हो गया और बयान के अल्फ़ाज़ मेरे ज़मीर को झन्झोड़ने लगे, कुछ ही देर बा'द मुझे अपने रुख़्सारों पर आंसूओं की नमी मह़सूस हुई।

इस बयान को सुनने के बा'द एक दम मेरी ज़िन्दगी का रुख़ तब्दील हो गया, दीगर गुनाहों के साथ साथ मैं ने दाढ़ी मुन्डाने से भी तौबा की और सर पर इमामा शरीफ़ सजा लिया। हर शख़्स ह़ैरान परेशान था कि अचानक इसे क्या हो गया है! बा'ज़ तो कहते थे कि येह ड्रामा बाज़ है कोई नया ड्रामा कर रहा है, कोई कहता था : इतनी जल्दी न करो, जल्दी भाग जाओगे। अल ग़रज़ जितने मुंह उतनी बातें लेकिन मैं ने सुधरने का पुख़्ता इरादा कर लिया था कि मैं ने ज़ियादा से ज़ियादा नेकियां कमा कर अपने गुनाहों का गोया कफ़्फ़ारा अदा करना है। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में मेरी ग़ैर मा'मूली दिल चस्पी की वजह से मैं तन्ज़ीमी तौर पर आगे बढ़ता चला गया, तक़रीबन 20 साल तक मुख़्तलिफ़ ज़िम्मादारियां निभाने की कोशिश के बा'द ता दमे तह़रीर रुकने काबीना की ह़ैसिय्यत से दा'वते इस्लामी की तरक़्क़ी के लिये कोशां हूं।

तेरा शुक्र मौला दिया मदनी माह़ोल न छूटे कभी भी ख़ुदा मदनी माह़ोल
सलामत रहे या ख़ुदा मदनी माह़ोल बचे बद नज़र से सदा मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 602)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फिर भी ह़सद न जाए तो?

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي इह़याउल उ़लूम में फ़रमाते हैं : अगर तुम अपने ज़ाहिर को भी **ह़सद** से रोक दो और दिल में पैदा होने वाले जज़्बए **ह़सद** को भी ना पसन्द करो और दूसरों से ने'मत के ज़वाल की दिल में पैदा होने वाली तमन्ना को भी

पसन्द न करो यहां तक कि अपने नफ़्स पर भी इस सबब से ग़ुस्सा करो तो तुम ने अपने इख़्तियार के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िम्मेदारी पूरी की। या'नी इतना कर चुकने के बा'द मजबूरन पैदा होने वाले **ह़सद** का गुनाह नहीं मिलेगा। (احیاء العلوم، ج ۳، ص ۲۳۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अगर किसी को आप से ह़सद हो तो ?

प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم के एक फ़रमाने आ़लीशान में येह भी है : كُلُّ ذِیْ نِعْمَۃٍ مَحْسُوْدٌ या'नी हर ज़ी ने'मत **ह़सद** किया जाता है। (المعجم الکبیر ج ۲۰ ص ۹۴ حدیث ۱۸۳ ملخصاً) इस ह़दीसे पाक के पेशे नज़र हर उस शख़्स के ह़ासिदीन की कुछ न कुछ ता'दाद ज़रूर होगी जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने मालो दौलत, इ़ज़्ज़त व शोहरत और दीगर फ़ज़ाइल व कमालात से नवाज़ा है लेकिन शरई दलील के बिग़ैर किसी को मुअ़य्यन कर के कहना कि "येह मुझ से **ह़सद** करता है" जाइज़ नहीं है क्यूंकि येह बद गुमानी है और बद गुमानी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

मुझे ग़ीबत व चुग़ली व बद गुमानी
की आफ़ात से तू बचा या इलाही (वसाइले बख़्शिश, स. 80)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शैख़ सा'दी के उस्ताज़ ने क्या ख़ूब टोका

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सा'दी علیہ رحمۃ اللہ الہادی फ़रमाते हैं : मैं ने एक बार अपने उस्ताज़े मोह़तरम ह़ज़रते अ़ल्लामा अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन जौज़ी علیہ رحمۃ اللہ القوی से अ़र्ज़ की : मैं लोगों में दर्से

ह़दीस पेश करता हूं तो फुलां शख़्स **ह़सद** करता और जलता है ! उस्तादे मोह़तरम ने फ़रमाया : ऐ सा'दी ! "तअ़ज्जुब" है कि तुम **ह़सद** को तो बुरी चीज़ तस्लीम करते हो मगर मेरे सामने किसी को **ह़ासिद** कह कर उस की बिला तकल्लुफ़ ग़ीबत कर रहे हो ! आख़िर तुम्हें येह किस ने कह दिया कि सिर्फ़ "**ह़सद**" ही ह़राम है क्या ग़ीबत ह़राम नहीं ? याद रखो ! अगर **ह़ासिद** जहन्नम का ह़क़दार है तो ग़ीबत करने वाला भी अ़ज़ाबे नार का सज़ावार है । (بوستانِ سعدی ص ۱۸۸ ملخّصاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللہ عزّوجل ! असातिज़ा हों तो ऐसे ! सिर्फ़ मख़्सूस अस्बाक़ पढ़ाने ही से ग़रज़ न हो, बल्कि त़लबा की अख़्लाक़ी तरबियत पर भी घ्यान रखें, एक उस्ताज़ ही क्या हर मुसलमान अपनी इस ज़िम्मेदारी को समझे और नेकी की दा'वत और गुनाह से मुमानअ़त की तरकीब व सूरत बनाता रहे । "बोस्ताने सा'दी" की ह़िकायत से येह भी सीखने को मिला की "फुलां मुझ से **ह़सद** करता है" कहना ग़ीबत है, बल्कि येह जुम्ला ग़ीबत से भी सख़्त गुनाह तोहमत की त़रफ़ जा रहा है क्यूंकि "**ह़सद**" बात़िनी अमराज़ में से है और इस का तअ़ल्लुक़ दिल से है अगर्चे कभी कभार वाज़ेह़ क़राइन (या'नी बिल्कुल साफ़ अ़लामतों) से भी **ह़सद** का इज़्हार हो जाता है मगर अकसर लोग क़ियास ही से किसी को **ह़ासिद** कह दिया करते हैं । **ह़सद** के मुतअ़ल्लिक़ ग़ीबत के मज़ीद सात फ़िक़रात मुलाह़ज़ा हों : ❁ जल कुक्कड़ है ❁ मुझ से जलता है ❁ मेरी तरक़्क़ी देख नहीं सकता ❁ मेरी ख़ुशी से ख़ुश नहीं हुवा ❁ मेरा नुक़्सान चाहता है ❁ मेरी भलाई में राज़ी नहीं ❁ मुझे देख कर उस के तन बदन में आग लग गई । (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 331)

नज़रे बद ऊंट को देग में उतार देती है

ह़सद के असरात का नज़रे बद की सूरत में ज़ाहिर होना मुमकिन है, ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْعَيْنُ تُدْخِلُ الرَّجُلَ الْقَبْرَ وَ تُدْخِلُ الْجَمَلَ الْقِدْرَ बेशक नज़र मर्द को क़ब्र में और ऊंट को देग में दाख़िल कर देती है।

(جمع الجوامع، ج۵،ص۲۰۲، الحدیث:۱۳۵۵۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ह़ासिद के शर से बचने के मदनी फूल

《1》 दुआ़ करते रहिये

बहर ह़ाल किसी पर **ह़सद** का यक़ीनी हुक्म लगाए बिग़ैर **अल्लाह** عزَّوجلَّ की बारगाह में ह़ासिद के शर से बचने की दुआ़ करते रहिये, क़ुरआने मजीद में ह़ासिद के **ह़सद** से पनाह मांगते रहने की ताकीद की गई है, चुनान्चे पारह 30 सूरए फ़लक़ आयत 5 में इरशाद होता है :

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾ (پ۳۰، الفلق:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और **ह़सद** वाले के शर से जब वोह मुझ से जले।*

﴾2﴿ तवज्जोह हटा लीजिये

दिल को इन ख़यालात से ख़ाली कर लीजिये कि फ़ुलां शख़्स मुझ से **ह़सद** या दुश्मनी कर रहा है क्यूंकि बसा अवक़ात इन्सान को इस का येही एह़सास, कि मेरा कोई दुश्मन या ह़ासिद है, नुक़्सान पहुंचाता है ।

﴾3﴿ सदक़ा व ख़ैरात कीजिये

इस से भी बलाएं और मुसीबतें दूर होती हैं और येह ह़ासिदों के **ह़सद** और नज़रे बद से बचने का मुजर्रब नुस्ख़ा है। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عزوجل के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلم ने फ़रमाया : सदक़ा देने में जल्दी किया करो क्यूंकि बला सदक़े से आगे नहीं बढ़ सकती । (مجمع الزوائد، ج ۳، ص ۲۸۴، الحدیث ۴۶۰۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

किसी को किसी से ह़सद न होगा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! क़ियामत से पहले एक वक़्त ऐसा भी आएगा जब किसी को किसी से **ह़सद** न होगा, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर दगार, ग़ैबों पर ख़बरदार, शहनशाहे अबरार صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلم का फ़रमाने मुश्कबार है : ख़ुदा की क़सम ! इब्ने मरयम (या'नी ह़ज़रते ईसा علیہ السلام) उतरेंगे, ह़ाकिम आ़दिल हो कर कि सलीब तोड़ देंगे और ख़िन्ज़ीर फ़ना कर देंगे,

जिज़्या ख़त्म फ़रमा देंगे, ऊंटनियां आवारा छोड़ दी जाएंगी जिन पर काम काज न किया जाएगा और कीने, बुग़्ज़ और **ह़सद** जाते रहेंगे, वोह माल की त़रफ़ बुलाएंगे तो कोई उसे क़बूल न करेगा।

(صحیح مسلم، ص۹۱، الحدیث:۲۴۳)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान علیہ رحمۃ اللہ الحنّان ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "और कीने, बुग़्ज़ और **ह़सद** जाते रहेंगे" के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा علیہ السّلام की बरकत से लोगों के दिलों से **ह़सद**, बुग़्ज़ (और) कीने निकल जाएंगे क्यूंकि किसी के दिल में दुन्या की मह़ब्बत न रहेगी। हर एक को दीन व ईमान की लगन लग जाएगी। मह़ब्बते दुन्या इन सब की जड़ है जब जड़ ही कट गई तो शाख़ें कैसे रहें। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 339)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ुलासए किताब

❁ **ह़सद** के बारे में जानना फ़र्ज़ है ❁ किसी की दीनी या दुन्यावी ने'मत के ज़वाल (या'नी इस से छिन जाने) की तमन्ना करना या येह ख़्वाहिश करना कि फुलां शख़्स को येह येह ने'मत न मिले, इस का नाम "**ह़सद**" है ❁ **ह़सद** की चार क़िस्में हैं और हर क़िस्म का हुक्म अलग अलग है ❁ रश्क कभी वाजिब होता है तो कभी मुस्तह़ब और कभी जाइज़ होता है ❁ **ह़सद** करने वाले को इन नुक़्सानात का सामना है : (1) **अल्लाह** व रसूल की नाराज़ी (2) ईमान की दौलत छिन जाने का ख़त़रा (3) नेकियां ज़ाएअ़ हो

जाना (4)मुख़्तलिफ़ गुनाहों में मुब्तला हो जाना (5) नेकियों के सवाब से मह़रूम रहना (6) दुआ़ क़बूल न होना (7) नुस्रते इलाही से मह़रूमी (8) ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना (9) सोचने समझने की सलाह़िय्यत कम हो जाना (10) ख़ुद पर ज़ुल्म करना (11) बिग़ैर ह़िसाब जहन्नम में दाख़िला। ۞ सात चीज़ें **ह़सद** की बुन्याद बन सकती हैं : (1) बुग़्ज़ व अ़दावत (2) ख़ुद साख़्ता इ़ज़्ज़त (3) तकब्बुर (4) एह़सासे कमतरी (5) मन पसन्द मक़ासिद के फ़ौत होने का ख़ौफ़ (6) हुब्बे जाह (7) क़ल्बी ख़बासत। ۞ दर्जे ज़ैल तदाबीर इख़्तियार कर के **ह़सद** से जान छुड़ाई जा सकती है :

۞ तौबा कर लीजिये ۞ दुआ़ कीजिये ۞ रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहिये ۞ **ह़सद** की तबाह कारियों पर नज़र रखिये ۞ अपनी मौत को याद कीजिये ۞ **ह़सद** का सबब बनने वाली ने'मतों पर ग़ौर कीजिए ۞ लोगों की ने'मतों पर नज़र न रखिये ۞ **ह़सद** से बचने के फ़ज़ाइल पर नज़र रखिये ۞ अपनी ख़ामियों की इस्लाह़ में लग जाइये ۞ **ह़सद** की आ़दत को रश्क में तब्दील कर लीजिये ۞ नफ़रत को मह़ब्बत में बदलने की तदबीरें कीजिये ۞ दूसरों की ख़ुशी में ख़ुश रहने की आ़दत बना लीजिये ۞ रूह़ानी इ़लाज भी कीजिये ۞ मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये।

(तफ़्सील के लिये किताब का फिर से मुत़ालआ़ कीजिये)

मदनी फूल

दूसरों की ग़लत़ी पकड़ते हुए इस इमकान को ज़ेह्न में रखना चाहिये कि हम ख़ुद भी ग़लत़ी पर हो सकते हैं।

फ़ेहरिस

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	हासिद का मुझ से कोई तअल्लुक़ नहीं	25
शिकारी खुद शिकार हो गया	1	ईमान की दौलत छिन जाने का ख़तरा	26
बातिनी गुनाहों की तबाह कारियां	4	**हसद** ईमान को बिगाड़ देता है	26
आपस में **हसद** न करो	7	**हसद** और ईमान एक जगह जम्अ नहीं होते	27
हसद किसे कहते हैं ?	7	**हसद** की वजह से ईमान से महरूम रहे	28
हसद की चन्द मिसालें	8	**हसद** करने वाले का बुरा ख़ातिमा	29
हसद को **हसद** क्यूं कहते हैं ?	8	हमारा क्या बनेगा ?	30
हसद बातिनी बीमारियों की मां है	8	नेकियां ज़ाएअ हो जाना	31
हासिद की मिसाल	9	मुख़्तलिफ़ गुनाहों में मुब्तला हो जाना	32
हसद, ग़ैरत और रश्क में फ़र्क़	10	**हसद**, ग़ीबत और तोहमत	32
रश्क की मुख़्तलिफ़ सूरतें	11	ग़ीबत की 20 तबाह कारियां	33
रश्क है या **हसद** ?	11	**हसद** और चुग़ली	34
क़ाबिले रश्क कौन ?	12	**हसद** और झूट	35
शाने महबूबी पर रश्क करेंगे	13	कुत्ते की शक्ल में बदल जाएगा	35
सहाबए किराम का नेकियों में रश्क	14	**हसद** और बद गुमानी	36
मोअज़्ज़िनीन हम से बढ़ जाएंगे	15	**हसद** और क़तए रेह्मी	38
कम सामान वाले पर रश्क	16	**हसद** और मुसलमानों को तक्लीफ़ देना	39
बदकार पर रश्क न करो	16	मुसलमान को तक्लीफ़ देना कैसा ?	39
हमारा रश्क किन चीज़ों में होता है ?	17	**हसद** और जादू टोना	40
मैं चरस और शराब का आदी था	19	**हसद** और शमातत	40
हासिद की क़िस्में	20	कहीं तुम इस परेशानी में मुब्तला न हो जाओ	41
सब से पहले शैतान ने **हसद** किया था	21	हासिद कब खुश होता है ?	42
शैतान के अन्जाम से इब्रत पकड़ो	21	**हसद** और क़त्ल	42
हसद शैतान का हथियार है	22	सब से पहला क़ातिल और मक़्तूल	42
हसद के नुक़्सानात	23	क़ाबील का इब्रतनाक अन्जाम	44
अल्लाह व रसूल की नाराज़ी	24	हर क़त्ल का गुनाह क़ाबील को भी मिलता है	45
हासिद अपने रब से मुक़ाबला करता है	24	उलटा लटका दिया गया	46
हासिद गोया **अल्लाह** तआला पर ए'तिराज़ करता है	25	नेकियों के सवाब से महरूम रहना	47

उन्वान	सफ़्हा
दुआ क़बूल न होना	47
नुस्रते इलाही से महरूमी	48
ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना	48
जलने वालों का मुंह काला	49
गधे की सूरत में उठाएंगे	50
सोचने समझने की सलाहिय्यत कम हो जाना	50
खुद पर ज़ुल्म करना	51
हसद से बढ़ कर नुक़्सान देह शै कोई नहीं	51
बिग़ैर हिसाब जहन्नम में दाख़िला	52
हसद के मज़ीद नुक़्सानात	53
हसद क्यूं होता है ?	54
बुग़्ज़ व अ़दावत के सबब **हसद**	54
यहूदियों के **हसद** की वजह	56
यहूदियों के **हसद** की मज़ीद वुजूहात	57
यहूदी मुआ़लिज का **हसद**	58
मुनाफ़िक़ीन का मुसलमानों से **हसद**	59
खुद साख़्ता इ़ज़्ज़त जाते रहने का ख़ौफ़	59
तकब्बुर के सबब **हसद**	60
एहसासे कमतरी के सबब **हसद**	60
मक़्सद फ़ौत हो जाने का ख़ौफ़	61
हुब्बे जाह के सबब **हसद**	62
क़ल्बी ख़बासत के सबब **हसद**	63
कौन किस से **हसद** करता है ?	63
पीर भाई की शैख़ से ज़ियादा रसाई पर रन्ज	65
ह़ासिद की तीन निशानियां	65
क्या हम किसी के **हसद** में मुब्तला हैं ?	65
अपना बातिन सुथरा रखिये	67
हसद के चौदह इलाज	68
(1) तौबा कर लीजिये	69
(2) दुआ कीजिये	70

उन्वान	सफ़्हा
(3) रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहिये	70
(4) **हसद** की तबाह कारियों पर नज़र रखिये	72
(5) अपनी मौत को याद कीजिये	72
(6) **हसद** का सबब बनने वाली ने'मतों पर ग़ौर	73
क्यूं **हसद** करूं ?	74
मैं ने कभी किसी से **हसद** नहीं किया	74
जिसे **अल्लाह** इ़ज़्ज़त दे उस से **हसद** न करो	75
(7) लोगों की ने'मतों पर नज़र न रखिये	75
(8) **हसद** से बचने के फ़ज़ाइल पर नज़र	76
सब से अफ़्ज़ल कौन ?	76
तुम जन्नत में मेरे साथ रहोगे	76
सायए अ़र्श में किस को देखा !	77
जन्नती शख़्स	77
लम्बी उ़म्र का राज़	79
(9) अपनी ख़ामियों की इस्लाह़	79
(10) **हसद** की आ़दत को रश्क में बदलना	80
(11) नफ़रत को महब्बत में बदलने की तदबीर	81
सर का बोसा ले लिया	81
(12) दूसरों की खुशी में खुश रहिये	82
(13) रूहानी इ़लाज भी कीजिये	83
(14) मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये	85
एक बयान ने मेरी ज़िन्दगी बदल दी	86
फिर भी **हसद** न जाए तो ?	88
अगर किसी को आप से हसद हो तो ?	89
शैख़ सा'दी के उस्ताज़ ने क्या खूब टोका	89
नज़रे बद ऊंट को देग में उतार देती है	91
ह़ासिद के शर से बचने के मदनी फूल	91
किसी को किसी से **हसद** न होगा	92
खुलासए किताब	93
मआख़िज़ो मराजेअ़	95

ماخذ و مراجع

نام کتاب	مطبوعه	نام کتاب	مطبوعه
کنزالایمان ترجمۂ قران	مکتبۃ المدینہ	تفسیرنعیمی	
التفسیر الکبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	تفسیر خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ
تفسیر روح البیان		تفسیر الدر المنثور	دار الفکر بیروت
تفسیر المدارک	دار المعرفۃ بیروت	تفسیر روح المعانی	داراحیاء التراث العربی بیروت
صحیح البخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	المعجم الکبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت
صحیح مسلم	دار ابن حزم بیروت	الجامع الصغیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت
سنن ابی داوٗد	دار احیاء التراث العربی بیروت	مصنف ابن ابی شیبۃ	دار الفکر بیروت
سنن الترمذی	دار الفکر بیروت	شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت
سنن ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	الترغیب والترھیب	دار الکتب العلمیۃ بیروت
سنن الدارمی	دارالکتاب العربی بیروت	المعجم الاوسط	دار الفکر بیروت
المستدرک	دار المعرفۃ بیروت	شرح السنۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
الموسوعۃ لابن ابی الدنیا	مکتبۃ العصریۃ بیروت	مسند ابی یعلی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
الغیبۃ والنمیمۃ	المکتبۃ العصریۃ بیروت	جامع الاحادیث	دار الفکر بیروت
السنن الکبریٰ	دار الکتب العلمیۃ بیروت	کنز العمال	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مجمع الزوائد	دار الفکر بیروت	جمع الجوامع	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر بیروت	فتح الباری	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مراۃ المناجیح		الدر المختار	دار المعرفۃ بیروت
بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ	فتاویٰ رضویہ(مخرجہ)	
الطبقات الکبریٰ للشعرانی	دار الفکر بیروت	قوت القلوب	مرکزاھل سنّت(الھند)
مکارم الاخلاق	دار الکتب العلمیۃ بیروت	الرسالۃ القشیریۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
احیاء علوم الدین	دار صادر بیروت	الزواجرعن اقتراف الکبائر	دار المعرفۃ بیروت
منہاج العابدین	دارالکتب العلمیۃ بیروت	الحدیقۃ الندیۃ	
کیمیائے سعادت	تہران ،ایران	درۃ الناصحین	دار الفکر بیروت
مکاشفۃ القلوب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	تنبیہ المغترین	دار المعرفۃ بیروت
تنبیہ الغافلین		شرح المقاصد	دارالکتب العلمیۃ بیروت
بوستانِ سعدی	انتشارات عالمگیر کتابخانہ ملی ایران	دلیل العارفین	
ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ	الوظیفۃ الکریمۃ	مکتبۃ المدینہ
مثنوی مولانا روم		غیبت کی تباہ کاریاں	مکتبۃ المدینہ
برے خاتمے کے اسباب	مکتبۃ المدینہ	آبِ کوثر	مکتبۃ المدینہ
شیطان کے چار گدھے	مکتبۃ المدینہ	72 مدنی انعامات	مکتبۃ المدینہ
عیون الحکایات	دارالکتب العلمیۃ بیروت	وسائلِ بخشش	مکتبۃ المدینہ
لسان العرب	مؤسّسۃ الأعلمی للمطبوعات بیروت		

याददाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमेरात बाद नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतेमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिए अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइए ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिए मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना जाइज़ा लेते हुवे नेक आमाल का रिसाला पुर कर के हर महीने की पेहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिए।

मेरा मदनी मक्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिए ''नेक आमाल'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिए ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ